संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 318
पृष्ठ 8
शुक्रवार
07 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक–उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध– शादी के बाद लड़कियों के गुस्सैल..

विचार– गोदी से लठैत भये, पब्लिक लीने...

खेल– श्रीलंका के खिलाफ उसके घर में...

सपा–कांग्रेस ने जिन्हें कभी पूछा नहीं, हमने उनकी पूजा की

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अब घुमंतू समाज को दर दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ेगा। डबल इंजन की सरकार उन्हें सम्मानजनक जीवन का अधिकार दिलाने, शासन की प्रत्येक जनकल्याणकारी योजना से जोड़ने और उनके समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगी। घुमंतू विकास बोर्ड केवल एक प्रशासनिक व्यवस्था नहीं, बल्कि वर्षों से उपेक्षित विमुक्त एवं घुमंतू समाज को न्याय, सम्मान और अवसर दिलाने का सशक्त माध्यम बनेगा। प्रदेश कैबिनेट द्वारा घुमंतू विकास बोर्ड गठन के निर्णय के उपरांत गुरुवार को समाज को ओर से आयोजित आभार एवं अभिनंदन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्सबका साथ, सबका विकासश का जो मंत्र देश को दिया था, उसी संकल्प का विस्तार आज समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। बिना जाति, क्षेत्र, भाषा अथवा किसी प्रकार के भेदभाव के प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचाने की इसी सोच की नई कड़ी घुमंतू विकास बोर्ड है। मुख्यमंत्री ने कहा कि डबल इंजन सरकार ने वनटांगिया, मुसहर, थारू, गौड़, चेरो, बुक्सा, कोल, सहरिया सहित अनेक वंचित समुदायों को पहली बार शासन की योजनाओं से व्यापक रूप से जोड़ा है। राशन कार्ड, भूमि के पट्टे, प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री आवास, आयुष्मान भारत कार्ड, निःशुल्क विद्युत एवं गैस कनेक्शन तथा वृद्धावस्था, निराश्रित महिला और दिव्यांगजन पेंशन जैसी योजनाओं का लाभ इन समुदायों तक पहुंचाया गया है। सरकार का लक्ष्य प्रत्येक पात्र व्यक्ति को सभी योजनाओं से शत प्रतिशत आच्छादित करना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी बार–बार कहते हैं कि जिन्हें कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने कभी नहीं पूछा, उन्हें पूजते हुए सम्मान देकर समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य डबल इंजन सरकार ने किया है। सरकार के लिए जनता केवल वोट बैंक नहीं, बल्कि जनार्दन है और इसी भावना के साथ प्रत्येक नागरिक तक विकास का लाभ पहुंचाया जा रहा है। सीएम ने कहा कि इसी तरह अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बच्चों के लिए आश्रम पद्धति विद्यालय तथा श्रमिक परिवारों के बच्चों के लिए अटल आवासीय विद्यालय स्थापित किए गए हैं,।

गोबर से होगी कमाई! मोदी कैबिनेट ने इस स्कीम को दी मंजूरी

नई दिल्ली,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आज केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में दो अहम निर्णय लिये गए। बैठक के बाद मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि सरकार ने 32 हजार 701 करोड़ रुपये के कुल निवेश वाले दो बड़े फैसलों को मंजूरी दी है। इनमें 23 हजार 731 करोड़ रुपये की गोबरधन योजना तथा असम में बाईहाटा चारियाली से तेजपुर तक 8 हजार 970 करोड़ रुपये की लागत से चार लेन राजमार्ग का निर्माण शामिल है।

वैष्णव ने बताया कि गोबरधन योजना का उद्देश्य देश में संपीड़ित बायो–गैस के उत्पादन और वितरण को नई गति देना है, ताकि ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को मजबूती मिले। सरकार का कहना है कि भारत अपनी प्राकृतिक गैस की लगभग 50 प्रतिशत जरूरत आयात से पूरी करता है और हाल के भू–राजनीतिक घटनाक्रमों के कारण ऊर्जा सुरक्षा नई चुनौती बनकर उभरी है। ऐसे में घरेलू स्तर पर उत्पादित बायो–गैस इसका स्थायी समाधान साबित होगी। मंत्री ने कहा कि इस योजना को छह प्रमुख स्तंभों पर तैयार किया गया है। इनमें उत्पाद की सुनिश्चित खरीद, मूल्य स्थिरता, पूंजीगत सहायता, पाइपलाइन अवसंरचना का विकास, ऋण गारंटी और नवाचार के लिए चौलेंज फंड शामिल हैं। प्रत्येक बायो–गैस संयंत्र को सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क या ट्रंक पाइपलाइन से जोड़ा जाएगा। सरकार समर्थित मूल्य व्यवस्था से वैश्विक ईंधन कीमतों में उतार–चढ़ाव का असर कम होगा। साथ ही एमएसएमई आधारित परियोजनाओं को 85 प्रतिशत तक ऋण गारंटी और संयंत्रों के लिए पूंजीगत सहायता भी दी जाएगी। हम आपको बता दें कि सरकार का अनुमान है कि अगले दस वर्षों में इस योजना से सीबीजी उत्पादन दस गुना तक बढ़ेगा, ऊर्जा आयात पर निर्भरता घटेगी और 40 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। इसके अलावा 75 हजार करोड़ रुपये से अधिक का योगदान राष्ट्रीय जीडीपी में होगा, डेढ़ लाख से अधिक रोजगार सृजित होंगे, 10 मिलियन मीट्रिक टन जीवाश्म ईंधन का विकल्प तैयार होगा, 40 मिलियन टन से अधिक कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और 250 मिलियन मीट्रिक टन जैविक उर्वरक का उत्पादन होगा।

टीवीके सरकार ने पेश किया पहला कृषि बजट: मिट्टी की सेहत, उत्पादकता बढ़ाने और एआई-आधारित सेवाओं को विस्तार करने की घोषणा

चेन्नई,एजेंसी। तमिलनाडु के कृषि और किसान कल्याण मंत्री आर. विनोथ ने गुरुवार को विधानसभा में तमिलगा वेट्री कझगम (टीवीके) सरकार का पहला कृषि बजट पेश किया। इसमें खेती की उत्पादकता बढ़ाने, मिट्टी की उर्वरता की रक्षा करने और किसानों के लिए टेक्नोलॉजी पर आधारित सेवाओं का विस्तार करने के मकसद से कई पहल की घोषणा की गई। 2026–27 के लिए कृषि बजट पेश करते हुए विनोद ने कहा कि सरकार मौजूदा कृषि योजनाओं को जारी रखेगी और साथ ही खेती की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए नए कार्यक्रम भी शुरू करेगी। मंत्री ने कहा कि यह बजट किसानों और कृषि निर्यातकों के साथ बातचीत के बाद तैयार किया गया था और इसमें संबंधित लोगों से मिले सुझावों को भी शामिल किया गया था। ये प्रस्ताव राज्य में कृषि के विकास के लिए मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय की दूरदर्शी सोच के अनुसार तैयार किए गए थे। तमिलनाडु की अर्थव्यवस्था में खेती के महत्व पर जोर देते हुए विनोद ने कहा कि कृषि इसकी रीढ़ है और इस सेक्टर को मजबूत किए बिना लगातार आर्थिक विकास हासिल नहीं किया जा सकता। प्रमुख घोषणाओं में श्तमिलनाडु मृदा संरक्षण मिशनश शामिल है, जिसके लिए सरकार ने 122.51 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। यह कार्यक्रम राज्य भर में मिट्टी की उर्वरता की रक्षा और सुधार करने तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने पर केंद्रित होगा। सरकार ने गुणवत्तापूर्ण धान के बीजों के उत्पादन और किसानों को उनके वितरण के लिए सब्सिडी प्रदान करने के लिए एक विशेष राज्य योजना के तहत 34.72 करोड़ रुपये भी निर्धारित किए हैं। विनोथ ने घोषणा की कि किसानों को व्यक्तिगत डिजिटल सेवाएं और जानकारी प्रदान करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस–आधारित एप्लिकेशन विकसित किया जाएगा। इस पहल के लिए 2026–27 के दौरान 2 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है। दालों और तिलहन फसलों के लिए आत्मनिर्भरता मिशन के लिए 203.64 करोड़ रुपये का बड़ा आवंटन किया गया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य दालों और तिलहन के घरेलू उत्पादन को बढ़ाना और राज्य के बाहर से आपूर्ति और आयात पर निर्भरता को कम करना है।

बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है, इसे देशव्यापी मुद्दा बनाएंगे : अभिजीत

नयी दिल्ली,एजेंसी। कॉकरोच जनता पार्टी (कॉजपा) के संस्थापक अभिजीत दीपके ने देश में बेरोजगारी को एक बड़ी समस्या बताते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि इसे देशव्यापी मुद्दा बनाया जाएगा। वह महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में कॉजपा की कोर टीम की बैठक खत्म होने के बाद संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। यह बैठक बुधवार से ही दीपके के घर पर हो रही थी। संवाददाता सम्मेलन में कॉजपा के मुख्य प्रवक्ता सौरव दास, प्रवक्ता आशुतोष रांका और अन्य प्रतिनिधि भी मौजूद थे। पिछले महीने नयी दिल्ली के जंतर–मंतर पर नीट प्रश्नपत्र लीक और परीक्षा में अन्य गड़बड़ियों को लेकर कॉजपा के नेतृत्व में हुए विरोध–प्रदर्शन के कारण धर्मेंद्र प्रधान को केंद्रीय शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफा देना पड़ा था। दीपके ने कहा, धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा छात्रों के आंदोलन की सबसे बड़ी कामयाबी है। उन्होंने कहा कि जंतर–मंतर पर हुए विरोध प्रदर्शन में सिर्फ छात्र ही नहीं, बल्कि बेरोजगार युवा भी शामिल हुए थे। उन्होंने कहा, बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है, हम इसे देशव्यापी मुद्दा बनाएंगे। हम शिक्षा में सुधार के लिए काम करेंगे।

विकसित भारत के विजन को आगे बढ़ा रही है प्रादेशिक सेना : राजनाथ सिंह

नयी दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने प्रादेशिक सेना को 'नागरिक–सैनिक' सहयोग की अवधारणा का जीता–जागता उदाहरण बताते हुए कहा है कि श्विकसित भारतश के विजन को आगे बढ़ाने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। श्री सिंह ने राष्ट्रीय सुरक्षा, आपदा राहत, पर्यावरण संरक्षण और समाज सेवा में बल की दोहरी भूमिका पर जोर दिया। श्री सिंह ने गुरुवार को यहां रक्षा मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें प्रादेशिक सेना पर विस्तार से चर्चा हुई। वरिष्ठ अधिकारियों ने सदस्यों को बल के काम, भूमिका और उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी, जबकि समिति के सदस्यों ने इसकी कार्यक्षमता को और बढ़ाने के लिए सुझाव दिये। रक्षा मंत्री ने कहा कि

प्रादेशिक सेना प्रशिक्षित कर्मियों का रिजर्व तैयार करके सशस्त्र बलों के लिए 'सर्ज कैपेसिटी' (जरूरत पड़ने पर अतिरिक्त क्षमता) बनाती है, जिन्हें जरूरत पड़ने पर तुरंत तैनात किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि नागरिक जीवन में लौटने के बाद, इसके सदस्य समाज और सेना के बीच एक पुल का काम करते हैं और खासकर युवाओं को सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रादेशिक सेना को 59 इकाईयों में लगभग 44,400 कर्मियों वाला एक प्रशिक्षित और प्रेरित बल बताते हुए श्री सिंह ने कहा कि यह प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सबसे पहले मदद करने वाले बल के रूप में उभरा है। इसने केरल में बाढ़, ओडिशा में चक्रवात और हाल ही में असम में आई बाढ़ के दौरान राहत, बचाव और चिकित्सा सहायता प्रदान की। पर्यावरण संरक्षण में इसके योगदान की सराहना करते हुए, उन्होंने कहा कि प्रादेशिक सेना की इकोलॉजिकल टास्क फोर्स ने लगभग 10 करोड़ पौधे लगाए हैं, जिनके जीवित रहने की दर 80–85 प्रतिशत है।

इससे प्रधानमंत्री के मिशन लाइफ और पंचामृत लक्ष्यों को हकीकत में बदलने में मदद मिली है। उन्होंने जम्मू–कश्मीर में श्हर घर तिरंगाश अभियान को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में इसकी भूमिका की भी सराहना की। बैठक में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, प्रमुख रक्षा अध्यक्ष जनरल एनएस राजा सुब्रमणि, सेना प्रमुख जनरल धीरज सेठ, रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह और अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

हमने चोरी के खिलाफ आवाज उठाई है, भगवान राम पर नहीं : संजय राउत

मुंबई,एजेंसी। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने गुरुवार को राम मंदिर दान में कथित हेराफेरी के मामले पर विपक्ष की आलोचना का बचाव किया। उन्होंने कहा कि मंदिर से दान और कीमती सामान की कथित चोरी पर सवाल उठाने को श्राम–विरोधीश होने जैसा नहीं माना जाना चाहिए। उनका यह बयान केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू के उस आरोप के बाद आया है, जिसमें उन्होंने विपक्ष पर संसद में बार–बार यह मुद्दा उठाकर भगवान राम का विरोधी होने का आरोप लगाया था। इस आरोप का जवाब देते हुए राउत ने कहा कि राम मंदिर में चोरी हुई थी। क्या इसके लिए भगवान राम जिम्मेदार हैं? हमने चोरी के खिलाफ आवाज उठाई और अब हमें राम–विरोधी कहा जा रहा है। यह कैसा हिंदुत्व है? पैसे चोरी हुए, दान पेटियां लूटी गईं, यहां तक कि गहने और माता सीता का मंगलसूत्र भी कथित तौर पर चोरी हो गया। हमने ये मुद्दे उठाए और अब हमें राम–विरोधी करार दिया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर, चोरी के लिए जिम्मेदार लोगों को राम भक्त के तौर पर पेश किया जा रहा है। विपक्ष राम मंदिर के लिए मिले दान में कथित गड़बड़ी और हेराफेरी का मुद्दा उठा रहा है और संसद के चल रहे मॉनसून सत्र में इसे एक अहम मुद्दा बना रहा है। बीजेपी की इस आलोचना पर कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जंतर–मंतर पर 20 जुलाई के छात्र विरोध प्रदर्शन पर तो आवाज उठाई, लेकिन झारखंड में चल रहे छात्रों के आंदोलन पर चुप रहे, राउत ने इस आरोप को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं यह नहीं मानता कि राहुल गांधी चुप हैं। मैं कभी नहीं मानूंगा कि राहुल गांधी लोगों, छात्रों या युवाओं के मुद्दों पर कभी चुप रहे हैं। झारखंड में अपनी सरकार है और वहां आंदोलन का नेतृत्व स्थानीय स्तर पर किया जा रहा है। पहली जिम्मेदारी उन लोगों की है जो जमीनी स्तर पर आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं।

राहुल ने भाजपा पर लगाए आरोप: आवाज उठाने से रोक नहीं सकते

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के छात्रों की गूंज कार्यक्रम को लेकर सियासी विवाद तेज हो गया है। आठ अगस्त को प्रयागराज के केपी ग्राउंड में होने वाले इस कार्यक्रम की मंजूरी आखिरी समय में रद्द कर दी गई। इसके बाद राहुल गांधी ने भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्हें छात्रों के हक की आवाज उठाने से कोई नहीं रोक सकता। कार्यक्रम की अनुमति रद्द होने के पीछे कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश, लगातार बारिश से मैदान में जलभराव और जिला प्रशासन से अंतिम मंजूरी नहीं मिलने का हवाला दिया है। हालांकि कांग्रेस इसे महज प्रशासनिक फैसला नहीं, बल्कि राजनीतिक दबाव का नतीजा बता रही है। राहुल गांधी आठ अगस्त को प्रयागराज में छात्रों के साथ संवाद करने वाले थे। इस कार्यक्रम में पेपर लीक, फीस बढ़ोतरी, सीटों में कटौती और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर चर्चा होनी थी। लेकिन कार्यक्रम से पहले ही ट्रस्ट ने अनुमति वापस ले ली।

कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष जितेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के 14 अगस्त 2025 के आदेश के अनुसार केपी ग्राउंड का इस्तेमाल सिर्फ खेल और शैक्षणिक गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा बारिश के कारण मैदान में पानी भर गया है, जिससे सुरक्षा संबंधी चिंताएं भी हैं। ट्रस्ट का यह भी कहना है कि जिला मजिस्ट्रेट की अंतिम मंजूरी नहीं मिली थी। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया मंच श्एक्सश पर लिखा कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र लंबे समय से फीस बढ़ोतरी और सीटों में कटौती जैसे मुद्दों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं।

मिशन 2028 पर कांग्रेस का बड़ा एक्शन, मध्य प्रदेश में सभी विभाग और प्रकोष्ठ भंग

भोपाल,एजेंसी। मध्य प्रदेश में लगातार चुनावी झटकों के बाद कांग्रेस ने संगठन को पूरी तरह सक्रिय बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। प्रदेश कांग्रेस के सभी विभागों और प्रकोष्ठों की इकाइयों को तत्काल प्रभाव से भंग कर दिया गया है। यह फैसला नयी दिल्ली में चल रही संगठनात्मक समीक्षा बैठक के दौरान लिया गया, जहां निष्क्रिय पदाधिकारियों और कमजोर संगठनात्मक गतिविधियों को लेकर गंभीर चिंता जताई गई। पार्टी नेतृत्व ने स्पष्ट संकेत दिया है कि अब केवल पद पर बने रहने से काम नहीं चलेगा। संगठन में वही लोग जिम्मेदारी निभाएंगे, जो मैदान में सक्रिय रहकर पार्टी को मजबूत करेंगे। दिल्ली में दो दिनों से चल रही बैठक में कांग्रेस नेतृत्व ने मध्य प्रदेश संगठन की कार्यशैली की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और संगठन के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल मौजूद रहे। समीक्षा के दौरान सामने आया कि प्रदेश से लेकर बूथ स्तर तक बड़ी संख्या में पदाधिकारी नियुक्त किए गए थे, लेकिन उनमें से अधिकांश की सक्रियता अपेक्षित स्तर की नहीं रही। कई पदाधिकारियों की भूमिका केवल प्रेस कॉन्फ्रेंस और औपचारिक कार्यक्रमों तक सीमित पाई गई, जबकि जमीनी स्तर पर संगठनात्मक गतिविधियां कमजोर रहीं। कांग्रेस ने विधानसभा और लोकसभा चुनावों में हार के बाद संगठन सृजन अभियान चलाकर प्रदेश, जिला, ब्लॉक और बूथ स्तर पर व्यापक संगठनात्मक ढांचा तैयार किया था। इसके तहत 24 विभाग और 39 प्रकोष्ठ गठित किए गए थे तथा लगभग 1,300 पदाधिकारियों को विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं। हालांकि समीक्षा में पाया गया कि कई विभागों और प्रकोष्ठों में अपेक्षित काम नहीं हुआ। कुछ इकाइयों में नियुक्तियां अधूरी रहीं, जबकि कई पदाधिकारी सक्रिय भूमिका निभाने में विफल रहे। इसी के चलते सभी इकाइयों को भंग करने का निर्णय लिया गया। प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने सभी विभागों और प्रकोष्ठों को भंग करने के साथ संकेत दिया कि जल्द ही नए सिरे से नियुक्तियां की जाएंगी। पार्टी की योजना है कि नए पदाधिकारियों का चयन उनकी सक्रियता, संगठनात्मक क्षमता और क्षेत्रीय कार्य के आधार पर किया जाएगा। साथ ही प्रयास रहेगा कि लोकसभा चुनाव तक संगठन में बार–बार बदलाव न करना पड़े, ताकि कार्यकर्ताओं को स्थिरता के साथ काम करने का अवसर मिले।

कांग्रेस के इस फैसले के पीछे आगामी चुनावी कार्यक्रम भी बड़ी वजह माना जा रहा है। वर्ष 2027 में मध्य प्रदेश में नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव प्रस्तावित हैं। इन्हें 2028 के विधानसभा चुनाव की तैयारी का महत्वपूर्ण चरण माना जा रहा है। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि स्थानीय निकायों के चुनाव संगठन की वास्तविक ताकत का परीक्षण होते हैं और यही चुनाव विधानसभा चुनाव की रणनीति तय करने में अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए संगठन को समय रहते पूरी तरह सक्रिय करना जरूरी है। दिल्ली बैठक के दौरान प्रदेश के 47 जिला कांग्रेस अध्यक्षों से भी संगठन की स्थिति और कार्यप्रणाली पर विस्तृत फीडबैक लिया गया।

राहुल गांधी के कार्यक्रम को लेकर अजय राय डीएम से मिले, कल प्रस्तावित है संवाद

प्रयागराज। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की प्रयागराज में प्रस्तावित छात्रों की गूंज कार्यक्रम स्थल की अनुमति निरस्त होने के बाद कांग्रेस में खलबली मच गई है। पहले मैदान में कार्यक्रम के लिए अनुमति मिली थी, बाद में अनुमति निरस्त

कर दी गई। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की प्रयागराज में प्रस्तावित छात्रों की गूंज कार्यक्रम स्थल की अनुमति निरस्त होने के बाद कांग्रेस में खलबली मच गई है। पहले मैदान में कार्यक्रम के लिए अनुमति मिली थी, बाद में अनुमति निरस्त कर दी गई। इसके चलते प्रशासन से कार्यक्रम की अनुमति नहीं मिल पा रही है। इसको लेकर कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय दो दिन से प्रयागराज में ही कैंप कर रहे हैं। केपी ट्रस्ट के अध्यक्ष से उनकी मुलाकात नहीं पाई। इसके बाद अजय राय, सांसद उज्ज्वल रमण सिंह, विधायक वीरेंद्र चौधरी और पार्टी के कई नेताओं को लेकर बृहस्पतिवार को जिलाधिकारी से मिलने के लिए पहुंचे। उनकी क्या बात हुई इस पर अभी संशय बना हुआ है। हालांकि केपी ग्राउंड में राहुल के आगमन के मद्देनजर तैयारी जोरों पर की जा रही है।

किशोर और किशोरी का रेल पटरी पर मिला शव, प्रेम-प्रसंग में ट्रेन के आगे कूदने की आशंका

प्रयागराज। घूरपूर थाना क्षेत्र के अमिलिया गांव में रेल पटरी पर एक किशोरी और किशोर का शव मिलने पर सनसनी फैल गई। दोनों की पहचान पड़ोस गांव बसवार के किशोर और किशोरी के रूप में हुई है। घूरपूर थाना क्षेत्र के अमिलिया गांव में रेल पटरी पर एक किशोरी और किशोर का शव मिलने पर सनसनी फैल गई। दोनों की पहचान पड़ोस गांव बसवार के किशोर और किशोरी के रूप में हुई है। ग्रामीणों के मुताबिक प्रेम प्रसंग में दोनों ट्रेन के आगे छलांग लगाकर आत्महत्या की है। फिलहाल पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। देर रात दोनों का शव पटरी पर देखा गया। सूचना पाकर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंच गई। कुछ देर में दोनों के परिजन भी मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

शिक्षकों के 11,508 रिक्त पदों का अधियाचन ई-पोर्टल पर अपलोड

प्रयागराज। प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में शिक्षक भर्ती प्रक्रिया जल्द शुरू होने के आसार हैं। नगर क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के लिए 11,508 पदों का अधियाचन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (एनआईसी) के ई-पोर्टल पर अपलोड किया गया है। नगरीय विद्यालयों में इतनी संख्या में रिक्त पदों पर अधियाचन करीब 30 वर्ष बाद अपलोड किए गए हैं। साथ ही ग्रामीण अंचल के विद्यालयों के लिए 48 हजार पदों का अधियाचन अपलोड करने की तैयारी है। उप्र शिक्षा सेवा चयन आयोग अधियाचन का परीक्षण कर करीब 59 हजार से अधिक पदों पर भर्ती प्रक्रिया को तेज कर सकता है। प्रदेश में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के 2.25 लाख से अधिक विद्यालय हैं। आंकड़ों के मुताबिक, इनमें डेढ़ लाख से अधिक शिक्षकों के पद रिक्त हैं। जून में बेसिक शिक्षा परिषद के सचिव सुरेंद्र तिवारी ने नगरीय क्षेत्र के लिए प्रत्यक्ष रूप से अधियाचन भेजा था। विधानसभा में पूछे गए सवालों के जवाब में पदों की पुष्टि की गई थी। विभागीय सूत्रों के अनुसार, नगरीय विद्यालयों में 12 से 15 हजार शिक्षकों के पद रिक्त हैं। बेसिक शिक्षा परिषद ने 11,508 पदों के लिए अधियाचन ई-पोर्टल पर अपलोड किया है। 2010 के बाद ग्रामीण अंचल में शिक्षकों की कमी को देखते हुए नगरीय क्षेत्रों के अध्यापकों के तबादले किए गए थे। इस वजह से नगरीय विद्यालयों में पद रिक्त हो गए थे। अब उन्हें भरने की कवायद तेज हो गई है।

स्ट्रीट लाइट के करंट से वृद्धा की मौत

प्रयागराज। अतरसुइया के गुजराती मोहल्ले में बुधवार सुबह बारिश के दौरान स्ट्रीट लाइट के कटे तार से उतरे करंट की चपेट में आकर वृद्धा कुंनन चौरसिया (75) की मौत हो गई। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने बिजली के खंभे में करंट उतरने की आशंका जताई लेकिन बिजली विभाग की जांच में खंभे में कोई करंट नहीं मिला। जांच में नगर निगम के स्ट्रीट लाइट से करंट आने की जानकारी मिली। कुंनन देवी कई सालों से मायके में रह रही थीं। पति छेदीलाल की मौत हो चुकी है। जनवरी 2026 में बीमारी के चलते उनके इकलौते बेटे की भी मौत हो गई थी। बुधवार सुबह कुंनन देवी नंगे पैर घर से बाहर सामान लेने के लिए निकली थीं। जैसे ही वह पड़ोसी के घर के सामने पहुंचीं, अचानक करंट की चपेट में आ गईं।

लोग ने पुलिस को सूचना दी। अतरसुइया पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। अतरसुइया थाना प्रभारी विवेक राय ने बताया कि प्रारंभिक जांच में स्ट्रीट लाइट के कटे तार से उतरे करंट की चपेट में आने से वृद्धा की मौत होने की सूचना है। मामले में अभी तक कोई तहरीर नहीं मिली है। हादसे की जानकारी पर कल्याणी देवी उपकेंद्र के जेई लवकुश कुमार व उनकी टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। जांच के दौरान बिजली के खंभे में करंट नहीं मिला, जबकि मकान की रेलिंग और पानी के पाइप में करंट की पुष्टि हुई। विभाग ने प्राथमिक जांच में नगर निगम की स्ट्रीट लाइट के कटे तार को हादसे की वजह बताया है।

कमजोर इम्युनिटी से क्रिप्टोकोकल संक्रमण का खतरा

प्रयागराज। मोती लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज (एमएलएन) में किए गए एक अध्ययन में क्रिप्टोकोकल संक्रमण से होने वाले जोखिमों का पता चला है। अध्ययन में 500 नमूनों में से 37 (7. 6 फीसदी) में क्रिप्टोकोकल संक्रमण की पुष्टि हुई। यह संक्रमण कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली (वीक इम्युनिटी) वाले व्यक्तियों के लिए गंभीर खतरा है।

एमएलएन मेडिकल कॉलेज के माइक्रोबायोलॉजी व न्यूरोलॉजी की ओर से दिसंबर 2024 यह अध्ययन शुरू किया गया। इसका उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश के तृतीयक देखभाल अस्पताल में क्रिप्टोकोकल संक्रमण के जोखिमों की पहचान करना था।

जेन-जी का मूड समझना हो तो प्रयागराज आइए..., यूं ही नहीं कहा जाता क्रांतिधरा

प्रयागराज। प्रयागराज एक बार फिर राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में है। जिस धरती ने आजादी के आंदोलन को दिशा दी, वही अब जेनरेशन-जी (ळमदर) की राजनीतिक सोच और देश की भावी सियासत का नया केंद्र बन रही है। राजनीतिक दलों की नजर यहां के युवाओं पर है, जिससे प्रयागराज ही नहीं, पूरे उत्तर प्रदेश का राजनीतिक माहौल गर्मा गया है।

प्रयागराज को यूं ही क्रांतिधरा नहीं कहा जाता है। आजादी की लड़ाई के नायकों झांसी की रानी, चंद्रशेखर आजाद से लेकर पीडी टंडन और जवाहर लाल नेहरू तक ने अंग्रेजों से मुक्ति की लड़ाई के बीज यहीं बोए और फिर आजादी की सुबह का आगाज यहीं बनी रणनीति से हुआ। अब जब देश की सियासत की दिशा तय करने के लिए जेनरेशन जेड यानी जेन-जी फ्रंट पर आ गई है तो उसके मूड को समझने के लिए सियासतदानों को प्रयागराज की पावन भूमि ही सुहाई है। इससे यहां के युवाओं के साथ पूरे प्रदेश की फिजा में गर्माहट है।

इसी का परिणाम है कि कांग्रेस के सबसे बड़े चेहरे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने जेन-जी से सीधे बात करने के लिए आठ अगस्त को प्रयागराज के ऐतिहासिक केपी ग्राउंड में पहुंचने की योजना बनाई है। यद्यपि कार्यक्रम की मंजूरी को लेकर बुधवार को भी ऊहापोह की स्थिति बनी रही। इसके बावजूद कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव, प्रदेश प्रभारी, प्रदेश अध्यक्ष के साथ छात्र इकाई एनएसयूआई के बड़े पदाधिकारी हॉस्टल से लेकर डेलीगेसी तक

खाक छानते रहे। उनके हाथों में पेपर लीक से संबंधित आंकड़े हैं तो नौकरियों में देरी के तमाम दस्तावेज। उनके पास राहुल का मिशन है तो सामने सत्ता का बड़ा लक्ष्य।

राहुल गांधी का कार्यक्रम आठ अगस्त को है प्रस्तावित

प्रयागराज में राहुल गांधी के जेन-जी से प्रस्तावित संवाद को नाम 'छात्रों की गूंज' दिया गया है। इससे कांग्रेसी जेनरेशन जेड और अल्फा दोनों को जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। रोचक तो यह है कि राहुल के प्रयागराज संवाद से दो दिन पहले ही बृहस्पतिवार को आरएसएस के सर संघचालक मोहन भागवत मुंबई में जेन-जी, जेन-अल्फा पीढ़ी के युवाओं और किशोरों से सीधा संवाद करेंगे। वैसे तो संवाद में 2000 से कुछ ज्यादा युवा ही हॉल में मौजूद रहेंगे, लेकिन वर्चुअली पूरे देश के युवाओं से जोड़ने का प्रयास विविध आनुषांगिक संगठन कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में सपा की युवा सांसद डिंपल यादव ने तो जंतर-मंतर पर जाकर नीट मामले में चले आंदोलन में भागीदारी की थी। बसपा ने यूपी विधानसभा चुनाव से पहले ही प्रचार का चेहरा आकाश आनंद को बना दिया है, जो सबसे युवा नेता हैं। जेन-जी को लुभाने के लिए राहुल गांधी का प्रयागराज संवाद अनायास नहीं होने जा रहा है। यहां चार विश्वविद्यालय हैं। एक केंद्रीय विश्वविद्यालय, एक लॉ यूनिवर्सिटी, एक राज्य विश्वविद्यालय और एक ओपन यूनिवर्सिटी है। केंद्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा का केंद्र है।

प्रयागराज शहर में हैं 20 लाख से अधिक छात्र

एक ट्रिपलआईटी, एक एमएनएनआईटी और आईईआरटी जैसे बड़े संस्थान हैं। साथ ही सिविल सर्विसेज, एसएससी, यूपीपीएससी की परीक्षाओं में बैठने वाले प्रतियोगी छात्रों की यहां बड़ी संख्या है। बिहार से लेकर पूर्वी उत्तर प्रदेश के लगभग सभी जिलों के विद्यार्थी और प्रतियोगी छात्र यहां रहते हैं। इसलिए जब कोई पेपर लीक होता है, रिजल्ट लेट होता है या प्रश्नपत्र में गड़बड़ी होती है तो पहली आवाज यहीं से उठती है। यानी यहां सबसे जागरूक और सबसे बड़ी जेनरेशन जेड की आबादी है। नीट पेपर लीक मामले में जंतर-मंतर के बाद एक दिन में सबसे बड़ा प्रदर्शन यहीं हुआ था, जिसके बाद केंद्र सरकार ने आंदोलनकारियों की बात मान ली थी।

इविवि का मुख्य द्वार बंद करने के विरोध में एकजुट हुए शिक्षक-कर्मचारी

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) के सीनेट परिसर के मुख्य द्वार को कई दिनों से बंद किए जाने के विरोध में बुधवार को शिक्षक और गैर-शिक्षक कर्मचारी खुलकर सामने आए। मध्यकालीन व आधुनिक इतिहास विभाग में प्रो. एआर सिद्दीकी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में विभिन्न संकायों के 300 से अधिक शिक्षकों ने हिस्सा लिया। उन्होंने कहा कि 13 जुलाई से विश्वविद्यालय का मुख्य द्वार कुछ उपद्रवी तत्वों ने बाधित किया है, जिससे छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और कर्मचारियों को रोजाना कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

प्रो. आशीष खरे ने कहा कि मुख्य द्वार बंद करना लोकतांत्रिक विरोध का तरीका नहीं है। इससे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था और छवि प्रभावित हो रही है। बैठक में प्रो. एसआई रिजवी, प्रो. हर्ष कुमार, प्रो. अजय जेटली और प्रो. जया कपूर ने अपने विचार व्यक्त किए। बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर नगर प्रशासन से मुख्य द्वार तत्काल खुलवाने, परिसर में निर्बाध आवागमन सुनिश्चित करने और शिक्षकों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों की सुरक्षा की गारंटी देने की मांग की गई। वहीं तिलक भवन में हुई गैर-शिक्षक कर्मचारियों की बैठक में भी मुख्य द्वार बंद किए जाने का विरोध किया गया।

होम्योपैथिक रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर डिसेबिलिटीज, चेन्नई में दो दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी कार्यशाला आयोजित

चेन्नई। सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन होम्योपैथी (सीसीआरएच- आयुष मंत्रालय, भारत सरकार) के तहत काम करने वाले होम्योपैथिक रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर डिसेबिलिटीज़ (एचआरआईडी), चेन्नई ने 6 अगस्त, 2026 को दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की। ब्लू बे रिसॉर्ट्स, मुट्टुकाडु (ईस्ट कोस्ट रोड) में हुई यह कार्यशाला सीसीआरएच के ऑफिसर्स और स्टाफ के लिए राजभाषा हिंदी क्रियान्वयन कार्यक्रम के हिस्से के तौर पर आयोजित की गई थी। एचआरआईडी चेन्नई और पूरे भारत में सीसीआरएच की अलग-अलग इकाइयों और संस्थानों के ऑफिसर्स समेत करीब 50 प्रतिनिधियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। वर्कशॉप का औपचारिक उद्घाटन डॉ. बेला, डिप्टी डायरेक्टर, हिंदी प्रशिक्षण योजना, डिपार्टमेंट ऑफ़ ऑफिशियल लैंग्वेज, मिनिस्ट्री ऑफ़ होम अफेयर्स (गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया), बेसेंट नगर, चेन्नई ने किया। इस कार्यक्रम का समन्वय श्रीमती मीनाक्षी भाटिया, वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष एवं हिंदी कार्यान्वयन अधिकारी, सीसीआरएच आयुष मंत्रालय, नई दिल्ली ने किया, जो कार्यक्रम की नोडल अधिकारी के रूप में

कार्यरत थीं। स्थानीय व्यवस्थाओं का कुशलतापूर्वक प्रबंधन डॉ. डी. कार्तिकेयन, प्रभारी अधिकारी, एचआरआईडी चेन्नई, और होम्योपैथी, एचआरआईडी चेन्नई के सलाहकार डॉ. कोल्ली राजू द्वारा किया गया।

सीसीआरएच नई दिल्ली के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, जिनमें श्री सुकृति सिंह, सहायक निदेशक (प्रशासन), और श्री उथमन नायर, लेखा अधिकारी ने उद्घाटन समारोह में भाग लेकर कार्यवाही की निगरानी की, और दो दिवसीय सत्र के दौरान सक्रिय मार्गदर्शन प्रदान किया। हिंदी शिक्षण योजना, राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई के प्रख्यात संसाधन व्यक्तियों ने संवैधानिक प्रावधानों और आधिकारिक भाषा के व्यावहारिक उपयोग को कवर करते हुए व्यावहारिक व्याख्यान दिएरू बेला ने "राजभाषा हिंदीः नीति से व्यवहार तक" विषय पर व्याख्यान दिया। एचटीएस की सहायक निदेशक डॉ. सुप्रजा ने "राजभाषा कार्यान्वयन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भूमिका" विषय पर बात की।

एचटीएस के सहायक निदेशक श्री हरि गणेश ने "शोध रिपोर्ट, परियोजना प्रस्ताव एवं प्रकाशनों में हिंदी" विषय पर एक सत्र प्रस्तुत किया।

व्याख्यानों में लोकसभा द्वारा अनुमोदित केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के अनिवार्य कार्यान्वयन के संबंध में आधिकारिक भाषा अधिनियम 1963 और 1976 के नियम (विशेष रूप से नियम 3.3,) सहित महत्वपूर्ण दिशानिर्देशों को विस्तार से शामिल किया गया।

एक्टिव पार्टिसिपेशन को बढ़ावा देने के लिए, 6 अगस्त, 2026 को हिंदी क्विज़, कविता पाठ और डिबेट समेत कई इंटरैक्टिव कॉम्पिटिशन ऑर्गनाइज़ किए गए। उसी दिन बाद में हुए समापन समारोह में श्री सुकृति सिंह और श्री उथमन नायर एक के बाद एक चीफ गेस्ट और गेस्ट ऑफ़ ऑनर थे। उन्होंने अलग-अलग कॉम्पिटिटिव इवेंट्स के विजेताओं को प्राइज़ और सर्टिफिकेट बांटे।

दाह संस्कार के बाद गंगा स्नान करने उतरा किशोर तेज बहाव में डूबा, तलाश जारी

प्रयागराज। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के फतेहपुर घाट पर बृहस्पतिवार शाम दाह संस्कार के बाद गंगा स्नान करने उतरा एक किशोर तेज बहाव में डूब गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से काफी देर तक तलाश की, लेकिन देर शाम तक उसका पता नहीं चल सका। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के फतेहपुर घाट पर बृहस्पतिवार शाम दाह संस्कार के बाद गंगा स्नान करने उतरा एक किशोर तेज बहाव में डूब गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से काफी देर तक तलाश की, लेकिन देर शाम तक उसका पता नहीं चल सका। सर्च ऑपरेशन जारी है। जानकारी के अनुसार, मनौरी के धरीकर बस्ती निवासी कल्लू के दाह संस्कार के लिए बड़ी संख्या में लोग फतेहपुर घाट पहुंचे थे। अंतिम संस्कार के बाद सभी गंगा स्नान कर रहे थे।

इसी दौरान शेखर उर्फ पेटू (17) पुत्र दिनेश धरीकर, निवासी मनौरी, गंगा किनारे कटान वाले हिस्से में बने नाले के तेज बहाव में बहकर डूब गया। सूचना मिलते ही पूरामुफ्ती पुलिस मौके पर पहुंची। ग्रामीणों की मदद से जाल डालकर काफी देर तक किशोर की तलाश की गई, लेकिन उसका कोई पता नहीं चल सका। पूरामुफ्ती थाना अविनाश सिंह ने बताया कि किशोर की तलाश के लिए सर्च ऑपरेशन जारी है। उसके मिलने के बाद ही आगे की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

'हम कुत्तों की तरह पीछे वार नहीं करते...' वायरल रील पर अतीक के बेटे अबान पर दर्ज हुई थी पहली एफआईआर

प्रयागराज। प्रयागराज में सड़क हादसे में जान गंवाने वाले माफिया अतीक अहमद के बेटे अबान अहमद के खिलाफ पिछले वर्ष सोशल मीडिया पर वायरल हुई एक कथित भड़काऊ रील के मामले में पहली एफआईआर दर्ज की गई थी। पुलिस ने रील को धमकी और दहशत फैलाने की कोशिश मानते हुए कार्रवाई की थी। माफिया अतीक अहमद का सबसे छोटा बेटा मोहम्मद आबान झांसी में सड़क हादसे में मौत के बाद एक बार फिर चर्चा में है। उमेश पाल हत्याकांड के बाद नाबालिग होने के कारण उसे बाल सुधार गृह भेजा गया था। बाद में न्यायालय के आदेश पर उसे परिजनों की अभिरक्षा में सौंप दिया गया था। इसके बाद भी वह समय-समय पर विभिन्न कारणों से सुर्खियों में रहा। आबान का नाम सबसे अधिक नवंबर 2025 में उस समय चर्चा में आया था, जब उसका एक शादी समारोह का करीब 30 सेकंड का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। वीडियो के बैकग्राउंड में कथित तौर पर धमकी भरा संवाद सुनाई दे रहा था, जिसे लेकर सोशल मीडिया पर व्यापक चर्चा हुई। मामले का संज्ञान लेते हुए धूमनगंज पुलिस ने वायरल वीडियो के आधार पर एफआईआर दर्ज की थी। पुलिस के अनुसार, सोशल मीडिया पर प्रसारित सामग्री की जांच के बाद विधिक कार्रवाई की गई थी। उस समय यह मामला प्रदेशभर में चर्चा का विषय बना था। आबान अतीक अहमद और शाइस्ता परवीन का सबसे छोटा बेटा था। बाल सुधार गृह से रिहा होने के बाद वह न्यायालय के आदेश पर परिजनों की अभिरक्षा में रह रहा था। उससे जुड़े घटनाक्रम समय-समय पर चर्चा में आते रहे। माफिया अतीक अहमद के छोटे बेटे अबान के सोशल मीडिया पर वायरल हुए धमकी भरे रील का पुलिस ने स्वतरू संज्ञान लिया था। वीडियो किसी शादी समारोह का था, जिसमें अबान दबंग अंदाज में नजर आ रहा था। बैकग्राउंड में धमकी भरा डायलॉग चल रहा था। वीडियो में अबान लोगों के साथ डिनर करते और गाड़ियों के काफिले के साथ दिखा था।

वीडियो में इस्तेमाल किए गए डायलॉग से कयास लगाए जा रहे हैं कि अतीक अहमद के परिवार की पुरानी छवि को फिर से जिंदा करने की कोशिश हो रही है। डायलॉग कुछ ऐसे हैं, श्सामने वाले को हमसे क्या मिलेगा, ये उसकी औकात बताएगी। हम दिल भी रखते हैं और असलहा भी। हम कुत्तों की तरह पीछे से वार नहीं करते, सामने से फाड़ते हैं। तूफान और हम जब भी आते हैं, मां कसम फाड़ के जाते हैं।श आखिर इस वीडियो को किस मकसद से बनाया गया, पुलिस इसकी तहकीकात कर रही है। अबान अतीक अहमद का सबसे छोटा बेटा है। अतीक के पांच बेटों में सबसे बड़ा उमर और दूसरे नंबर का अली फिलहाल जेल में बंद हैं। तीसरे नंबर का असद पुलिस मुठभेड़ में मारा जा चुका है। असद ने उमेश पाल हत्याकांड को अपने साथियों के साथ अंजाम दिया था। अबान पर यह पहली प्राथमिकी थी। जो भड़काऊ रील वायरल करने के आरोप में दर्ज हुई थी।

मेजा में फसल की रखवाली कर रहे किसान प्रेमचंद की हत्या

प्रयागराज। प्रयागराज के मेजा में फसल की रखवाली कर रहे किसान प्रेमचंद की हत्या का मामला सामने आया है। उसके शरीर पर कई जगह चोट के निशान मिले हैं। पुलिस जांच में जुटी है। प्रयागराज के मेजा क्षेत्र में एक किसान की खेत में हत्या कर दी गई है। बैरहना गांव के 40 वर्षीय किसान प्रेमचंद की देर रात अज्ञात लोगों ने जान ले ली। सुबह परिवार के सदस्यों ने इस घटना की सूचना पुलिस को दी। परिजनों के अनुसार, प्रेमचंद धान की रोपाई के बाद अपनी फसल की रखवाली कर रहा था। वह खेत में पेड़ पर बने मचान पर रहता था। बताया जा रहा है कि कई दिनों से कुछ लोग रोपे गए धान के पौधे उखाड़ रहे थे। इसी कारण प्रेमचंद खेत की सुरक्षा के लिए वहां मौजूद था। आशंका है कि आरोपियों ने रात में धान की फसल उखाड़ते समय प्रेमचंद का विरोध किया होगा। इसके बाद हुए विवाद में आरोपियों ने प्रेमचंद की हत्या कर दी। प्रेमचंद के शरीर पर कई जगह चोट के निशान मिले हैं। सूचना मिलने पर इंस्पेक्टर मेजा नितेंद्र शुक्ला और मेजा सहायक पुलिस आयुक्त बृजेश पाठक मौके पर पहुंचे। पुलिस ने जांच पड़ताल शुरू कर दी है। परिवार के सदस्यों ने बताया कि प्रेमचंद अपनी धान की फसल को बचाने के लिए खेत में रखवाली कर रहा था। कुछ अज्ञात लोग लगातार रोपे गए धान के पौधों को नुकसान पहुंचा रहे थे। इस गतिविधि को रोकने के लिए प्रेमचंद मचान पर रहकर निगरानी कर रहा था। पुलिस को आशंका है कि इसी विरोध के चलते उसकी हत्या की गई है। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। इंस्पेक्टर मेजा नितेंद्र शुक्ला और मेजा सहायक पुलिस आयुक्त बृजेश पाठक ने घटनास्थल का निरीक्षण किया।

दशहरे से पहले पूरा होगा कल्याणी देवी मंदिर का काम

प्रयागराज। महापौर गणेश केसरवानी ने बुधवार को कल्याणी देवी मंदिर क्षेत्र और बाई का बाग का निरीक्षण किया। उन्होंने नगर निगम के विकास कार्यों की समीक्षा की। अधिकारियों को 30 सितंबर तक दशहरे से पहले मंदिर क्षेत्र के कार्य पूरे करने के निर्देश दिए। महापौर ने सीएम ग्रिड योजना के तहत चल रहे कार्यों का जायजा लिया। कल्याणी देवी मंदिर परिसर और आसपास के मार्गों का निरीक्षण किया। नगर आयुक्त साईं तेजा ने बताया कि पेयजल पाइपलाइन का कार्य पूरा हो चुका है। अंडरग्राउंड विद्युत वायरिंग और फुटपाथ निर्माण के लिए खुदाई जारी है।

भारतीय रेलवे कोचों में आग की घटनाओं को रोकने के लिए कई स्तरों पर अग्नि सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करता है

प्रत्येक कोच में कम से कम दो अग्निशामक यंत्र, पैंट्री कारों में वॉटर मिस्ट अग्निशामक यंत्र और यात्री आपातकालीन संचार सुविधाएं कोच की सुरक्षा को मजबूत करती हैं'

इंटीग्रेटेड रेल मदद हेल्पलाइन 139 यात्रियों के लिए आपातकालीन सहायता तक त्वरित पहुंच सक्षम बनाती है

आपात स्थिति में, भारतीय रेलवे का प्रारंभिक ध्यान लोगों की जान बचाने, घायलों की देखभाल करने और फंसे हुए यात्रियों को राहत प्रदान करने पर होता हैरू श्री अश्विनी वैष्णव

'177 दुर्घटना राहत ट्रेनें, 100 ब्रेकडाउन क्रेन और 170 चिकित्सा राहत इकाइयां रेलवे की आपातकालीन प्रतिक्रिया क्षमता को मजबूत करती हैं'

भारतीय रेलवे स्टेशनों और ट्रेनों में आकस्मिक कारणों से लगने वाली आग सहित सभी संभावित खतरों से निपटने के लिए, अपने सभी जोनों में रोकथाम, तैयारी, त्वरित कार्रवाई और राहत कार्यों में लगातार जुटा हुआ है।

भारतीय रेलवे द्वारा रेलवे स्टेशनों पर किए गए महत्वपूर्ण अग्नि सुरक्षा उपाय निम्नलिखित हैं–

आग लगने की स्थिति में उपयोग के लिए रेलवे स्टेशनों पर पोर्टेबल अग्निशामक यंत्र (फायर एक्सटिंग्विशर) उपलब्ध कराए गए हैं।

आग लगने की स्थिति में उपयोग के लिए रेलवे स्टेशनों पर रेत और पानी से भरी आग बुझाने वाली बाल्टियाँ भी उपलब्ध कराई गई हैं।

भारतीय रेलवे यह सुनिश्चित करता है कि उसके फ्रंटलाइन कर्मचारी अग्निशामन (फायर फाइटिंग), प्राथमिक चिकित्सा (फर्स्ट एड) और आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण लेकर आपात स्थितियों से निपटने के लिए हमेशा तैयार रहें। इन विषयों को स्टेशन मैनेजर, ट्रेन मैनेजर (गार्ड), कमर्शियल–कम–टिकट क्लर्क, लोको पायलट, असिस्टेंट लोको पायलट आदि जैसे फ्रंटलाइन कर्मचारियों के प्रशिक्षण मॉड्यूल में शामिल किया गया है।

भारतीय रेल आपदा प्रबंधन संस्थान (आईआरआईडीएम), जो एक विशेष प्रशिक्षण संस्थान है, महत्वपूर्ण शुरुआती समय (गोल्डन ऑवर) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पहले प्रतिक्रियाकर्ताओं यानी ट्रेन क्रू और ऑन–बोर्ड कर्मचारियों (जैसे ट्रेन टिकट परीक्षक, एसी कोच स्टाफ और एस्कॉर्टिंग स्टाफ) को प्रशिक्षित करने के लिए अग्निशामन, प्राथमिक चिकित्सा, ट्रॉमा मैनेजमेंट आदि में नियमित पाठ्यक्रम संचालित करता है।

रेलवे स्टेशनों और नियंत्रण कक्षों के अधिकारियों के लिए निकटतम दमकल विभाग, पुलिस, चिकित्सा सुविधाओं, एम्बुलेंस, जिला प्रशासन, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) आदि से संपर्क करने हेतु उचित संचार प्रोटोकॉल निर्धारित किए गए हैं। उनके संपर्क नंबर सभी संबंधित रेलवे अधिकारियों को उपलब्ध करा दिए गए हैं।

बड़े रेलवे स्टेशनों पर रिले रूम और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग रूम में ऑटोमैटिक फायर अलार्म लगाए जा रहे हैं। रेलवे स्टेशनों पर स्टेशन मास्टर के लिए कंट्रोल फोन की व्यवस्था होती है, ताकि ओवरहेड इक्विपमेंट (ओएचई) में आग लगने की स्थिति में ओएचई की बिजली आपूर्ति को तुरंत काटा जा सके।

रेलवे स्टेशनों पर लगे पब्लिक एड्रेस सिस्टम (सार्वजनिक घोषणा प्रणाली) का उपयोग आग जैसी आपात स्थिति में लोगों को बाहर निकालने के लिए मार्गदर्शन करने हेतु किया जा सकता है।

यात्रियों और आम जनता को ज्वलनशील वस्तुएं न ले जाने के महत्व के प्रति जागरूक करने के लिए लगातार घोषणाएं की जाती हैं।

बड़े रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के सामान की स्कैनिंग की जाती है। विशेष अवधियों के दौरान यात्रियों द्वारा ज्वलनशील सामग्री ले जाने से रोकने के लिए विशेष अभियान चलाए जाते हैं।

शॉर्ट–सर्किट के कारण आग लगने की किसी भी संभावना को रोकने के लिए स्टेशनों पर विद्युत प्रणालियों का नियमित रखरखाव किया जाता है। इलेक्ट्रिकल पैनलों में मिनिएचर सर्किट ब्रेकर (एमसीबी) और मोल्ड्ड केस सर्किट ब्रेकर (एमसीसीबी) का उपयोग किया जाता है। स्टेशनों पर आपातकालीन लाइटें भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

आपात स्थिति के दौरान जनता को बाहर निकलने में मदद करने के लिए स्टेशनों पर निकास द्वारों को अच्छी तरह से चिह्नित किया गया है।

आग लगने जैसी आपातकालीन स्थितियों में इस्तेमाल के लिए, कोच में पानी भरने की सुविधा वाले बड़े रेलवे स्टेशनों पर जल भंडारण करने की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध है। रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर आग जलाकर खाना पकाने की अनुमति नहीं है।

रेलवे स्टेशनों और कार्यालय भवनों के अंदर और आसपास के सभी इलेक्ट्रिकल इंस्टॉलेशन का नियमित ऑडिट/सुरक्षा अभियान चलाया जा रहा है। भारतीय रेलवे की ट्रेनों में अग्नि सुरक्षा में ट्रेनों के डिजाइन, निर्माण, रखरखाव और संचालन के सभी चरण शामिल हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि भारतीय रेलवे की ट्रेनों में आग लगने की घटनाएं न हों, बड़ी संख्या में कदम उठाए गए हैं, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं–

भारतीय रेलवे के सभी डिब्बों (कोचों) में कम से कम दो अग्निशामक यंत्रों (फायर एक्सटिंग्विशर) की व्यवस्था।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पावर कारों और पैंट्री कारों के आग लगने की आशंका वाले क्षेत्रों में फायर डिटेक्शन एंड सप्रेशन सिस्टम (आग का पता लगाने और बुझाने की प्रणाली) की व्यवस्था की गई है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, मौजूदा दिशा–निर्देशों के अनुसार कोचों में आग और धुएं का पता लगाने वाली प्रणाली (फायर एंड स्मोक डिटेक्शन सिस्टम) की व्यवस्था की गई है।

चरणबद्ध तरीके से पैंट्री कारों और पावर कारों में वाटर मिस्ट प्रकार के अग्निशामक यंत्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

आग लगने की स्थिति में बाहर निकलने के लिए कोचों में आपातकालीन खिड़कियों (इमरजेंसी विंडो) की व्यवस्था।

बेहतर अग्नि सुरक्षा के लिए कोचों की सीटों/बर्थ, पैनलों, फर्श, इंसुलेशन, शौचालयों आदि में ग्लोबल फ़ायर–रिटार्डेंट मानदंडों के अनुसार अग्नि–रोधी सामग्री का उपयोग।

कोचों में फायर–रिटार्डेंट ई–बीम केबल्स का उपयोग।

इलेक्ट्रिकल फॉल्ट्स या सर्ज से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए विद्युत सर्किट में फ़्यूज़, मिनिएचर सर्किट ब्रेकर (एमसीबी) और मोटर प्रोटेक्शन सर्किट ब्रेकर (एमपीसीबी) के रूप में विभिन्न स्तरों की सुरक्षा का उपयोग।

इलेक्ट्रिकल कैबिनेट में एरोसोल–आधारित अग्नि शमन प्रणाली (एयरोसोल बेस्ड फायर सप्रेशन सिस्टम) की व्यवस्था।

अमृत भारत और वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों में आधुनिक सामग्री की फिटिंग के साथ, वैश्विक मानकों के अनुरूप सामग्री का नियमित रूप से अप–ग्रेडेशन किया जा रहा है।

आग को रोकने के लिए ष्क्या करेंष और ष्क्या न करेंष के बारे में यात्रियों को सूचित करने और सतर्क करने के लिए सभी कोचों में व्यापक जानकारी हेतु ष्फायर नोटिसष का प्रदर्शन। इनमें ज्वलनशील सामग्री, विस्फोटक न ले जाने, कोचों के अंदर धूम्रपान पर प्रतिबंध और दंड आदि से संबंधित संदेश शामिल हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

कोच में आग जलाकर खाना पकाने पर रोक।

वंदे भारत के प्रत्येक कोच में 4 इमरजेंसी टॉक बैक यूनिट का प्रावधान है। यह आपात स्थिति में यात्रियों को ट्रेन मैनेजर (गाड़ी प्रबंधक) / लोको–पायलट से संवाद करने की सुविधा प्रदान करता है। वंदे भारत ट्रेन में पैसेंजर इमरजेंसी अलार्म बटन भी उपलब्ध कराए गए हैं। आपातकालीन उपयोग के लिए प्रत्येक कोच में ऐसे 4 पुश बटन लगाए गए हैं।

श्रेल मददश नाम की एक इंटीग्रेटेड हेल्पलाइन है, जिसका उपयोग आपात स्थिति के दौरान सहायता प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ता 139 नंबर के माध्यम से कर सकते हैं।

यद्यपि उपर्युक्त उपायों से भारतीय रेलवे को आग की घटनाओं को रोकने में मदद मिली है, फिर भी भारतीय रेलवे विभिन्न कारकों के कारण संभावित रूप से होने वाली आग जैसी आपात स्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए हमेशा तैयार है। भारतीय रेलवे आग सहित किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में त्वरित और प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए हमेशा तैयार है। ऐसी किसी भी आपात स्थिति में, पहले प्रतिक्रिया देने वाले (फर्स्ट रिस्पॉन्डर) रेलवे कर्मचारी होते हैं, जिन्हें ऐसी आपात स्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इस तरह की आपात स्थिति की सूचना मिलते ही, भारतीय रेलवे अपनी व्यवस्था, उपकरणों, डॉक्टरों और कर्मचारियों का उपयोग करते हुए तुरंत कार्रवाई करता है, और तुरंत बचाव एवं राहत कार्य शुरू करने के लिए राज्य सरकार तथा जिला प्रशासन के साथ भी तालमेल बिठाता है।

आरंभिक ध्यान जान बचाने, घायलों की देखभाल करने और फंसे हुए यात्रियों को सहायता प्रदान करने पर होता है।

भारतीय रेलवे के पास पूरे रेल नेटवर्क को कवर करने के लिए चिन्हित स्थानों पर 177 एक्सीडेंट रिलीफ ट्रेनें (एआरटी), 100 उच्च क्षमता वाली 140टी ब्रेकडाउन डीजल–हाइड्रोलिक क्रेन और 170 एक्सीडेंट रिलीफ मेडिकल इक्विपमेंट (एआरएमई) स्केल–ष मौजूद हैं। इसके अलावा, तुरंत चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए चिन्हित स्थानों पर एआरएमई स्केल–ष्ष और दुर्घटनाओं के लिए पोर्टेबल मेडिकल किट भी उपलब्ध कराई गई हैं। एआरएमई स्केल–ष पहियों पर बने अस्पताल की तरह हैं, जिन्हें चिकित्सा उपकरणों, सामग्री और कर्मियों से पूरी तरह तैयार करके तुरंत दुर्घटना स्थल के लिए रवाना किया जाता है।

ऐसी दुर्घटनाओं से निपटने के लिए सड़क वाहन, अर्थमूवर, एम्बुलेंस आदि जैसे अतिरिक्त उपकरण भी मंगाए जाते हैं। ऐसी आपात स्थितियों में प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी की भूमिका तय होती है और उन्हें अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने के लिए आवश्यक ट्रेनिंग और अधिकार दिए जाते हैं।

साथ ही, आग लगने जैसी किसी भी बड़ी असामान्य घटना की सूचना मिलने पर, भारतीय रेलवे स्थिति से तुरंत और प्रभावी ढंग से निपटने में सहायता के लिए आवश्यकतानुसार जिला अधिकारियों, दमकल विभाग (फायर ब्रिगेड), चिकित्सा सुविधाओं, पुलिस बलों आदि सहित स्थानीय नागरिक प्रशासन को तुरंत सूचित करती है। रेलवे और इन अन्य एजेंसियों दोनों द्वारा समन्वित प्रतिक्रिया के लिए पूरे भारतीय रेलवे में प्रणालियां और प्रोटोकॉल स्थापित किए गए हैं।

आग जैसी आपात स्थितियों से निपटने के लिए प्रक्रियाएं और दिशा–निर्देश जोन और मंडलों की आपदा प्रबंधन योजनाओं, सामान्य एवं सहायक नियमों, दुर्घटना नियमावली और संचालन नियमावली में निर्धारित किए गए हैं। रेलवे स्टेशन तत्काल आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए अपने टेलीफोन नंबरों के साथ–साथ नजदीकी अग्निशामक केंद्रों की सूची और आस–पास उपलब्ध सभी रेलवे तथा गैर–रेलवे चिकित्सा संस्थानों, निजी चिकित्सकों और फर्स्ट–एइडर्स की सूची को बनाए रखते हैं और प्रदर्शित करते हैं।

भारतीय रेलवे के पास अपनी प्रणालियों को किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रखने हेतु नियमित मॉक ड्रिल आयोजित करने की एक सुविकसित प्रणाली है। मंडलों द्वारा भारतीय रेलवे के भीतर की सभी बचाव एजेंसियों के साथ–साथ दमकल विभाग, पुलिस, जिला अधिकारियों, चिकित्सा प्रणालियों एवं सुविधाओं और आपदा प्रतिक्रिया बलों को शामिल करते हुए फुल–स्केल मॉक ड्रिल आयोजित की जाती हैं। वर्ष 2025–26 के दौरान अहमदाबाद, वडोदरा, राजकोट और भावनगर मंडलों में ऐसे चार मॉक ड्रिल सहित कुल 71 पूर्ण–स्तरीय मॉक ड्रिल आयोजित किए गए। यह जानकारी केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा आज लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में दी गई।

कजरी की है धूम

(कुण्डलिया)

बारिश के ही साथ में, त्योहारों का पुंज।
सावन लेकर आ गया, हर्षित हुए निकुंज।
हर्षित हुए निकुंज,कुंज में भी हरियाली।
कजरी की है धूम, गगन से बरसे पानी।
होकर मगन प्रदीप, सभी से करें गुज़ारिश।
नहीं उजाड़ो बाग, यही लाते हैं बारिश।।

बारिश की जल–बूँद से, होकर हिना जवान।
लिखे हथेली पर नया, प्रिय का प्रिय उनवान।
प्रिय का प्रिय उनवान,नयन की भाषा समझे।
सावन के त्योहार,सजन पा गोरी चहके।
सुन लो कहें प्रदीप,प्रीति की मधुर गुज़ारिश।
साजन का हो साथ, और सावन की बारिश।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

भयहरण नाथ धाम में नौ दिवसीय संगीतमय शिवमहापुराण कथा का आयोजन कल 8 अगस्त से

17 अगस्त नागपंचमी पर घुघुरी लोक उत्सव का होगा भव्य आयोजन

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरण नाथ धाम में पवित्र सावन मास में प्रबन्ध संस्था भयहरण नाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान द्वारा 8 अगस्त से 16 अगस्त तक नौ दिवसीय संगीतमय शिवमहापुराण कथा का आयोजन होगा। वहीं नाग पंचमी के अवसर पर परम्परागत घुघुरी लोक उत्सव का भव्य आयोजन किया

जायेगा। यह जानकारी देते हुए भयहरण नाथ धाम के महासचिव व प्रबन्धक समाज शेखर ने बताया कि प्रख्यात कथा वाचक भागवतभूषण पं. विजयकान्त तिवारी जी महाराज के मुखारबिंद से पर्यटक हाल में प्रतिदिन शाम 04 बजे से 08 बजे तक कथा होगी। उन्होंने बताया कि कथा का समर्पण धाम के उद्धारक ब्रह्मलीन श्री नागा बाबा जी महाराज, श्री माहेश्वरा नंद जी महाराज (राम जी बाबा) व श्री राम लोचन ब्रह्मचारी जी महाराज सहित सभी संतों को किया गया है। मार्गदर्शन सिद्ध संत श्री सर्वेश गिरि जी महाराज व प्रसिद्ध कथा व्यास श्री देवव्रत जी महाराज, विधायक जीत लाल पटेल व नगर अध्यक्ष अशोक कुमार मुन्ना यादव का प्राप्त है। महासचिव समाज शेखर ने बताया कि आयोजक भयहरणनाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान तथा नगर पंचायत कटरा गुलाब सिंह का सहयोग एवं मन्दिर व मेला उपसमिति सहित समस्त क्षेत्रवासियों की सहभागिता व भागीदारी से भव्य व दिव्य कथा का आयोजन होगा। धाम के अध्यक्ष आचार्य राज कुमार शुक्ल, कोषाध्यक्ष लाल जी सिंह तथा मन्दिर समिति सचिव मुरली पांडेय, मेला सचिव अनिल मिश्र व कार्यालय प्रभारी नीरज मिश्र ने सभी श्रद्धालुओं से इस पुनीत कार्य में भागीदारी की अपील की है।

आधुनिक शिक्षा की ओर एक कदम

प्राथमिक विद्यालय बलरामपुर के छात्र अब स्मार्ट टीवी से करेंगे पढ़ाई–डिजिटल पढ़ाई की नई शुरुआत

स्मार्ट क्लास से बच्चों को मिलेगा तकनीकी ज्ञान – खंड विकास अधिकारी

मथुरा। विकास खंड बलदेव के ग्रामीण परिषदीय विद्यालयों में भी अब शिक्षा के बदलते स्वरूप की तस्वीर नजर आने लगी है। शिक्षा को तकनीक से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए विकासखंड के प्राथमिक विद्यालय बलरामपुर में खंड विकास अधिकारी नेहा रावत ने स्मार्ट टीवी के शुभारंभ का फीता काटकर, स्मार्ट कक्षा की विधिवत शुरुआत कर शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा देने की पहल की। तकनीक आधारित इस कक्षा के शुरू होने से अब यहां के छात्र–छात्राएं डिजिटल माध्यम से पढ़ाई कर सकेंगे और देश–दुनिया की जानकारियों से भी रूबरू होंगे। इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी नेहा रावत ने विद्यालय का निरीक्षण किया और बच्चों से बातचीत कर, उनकी शैक्षणिक गतिविधियों की जानकारी ली। उन्होंने आधुनिक शिक्षा के इस दौर में स्मार्ट क्लास को बच्चों के ज्ञान और सीखने की क्षमता को नई दिशा देने वाला बताया। उन्होंने कहा कि स्मार्ट क्लास के माध्यम से बच्चों को विषयों को समझने में आसानी होगी और उनकी रुचि पढ़ाई के प्रति और अधिक बढ़ेगी क्यूंकि आधुनिक समय में शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक की भूमिका लगातार बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि डिजिटल युग में शिक्षा को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए स्मार्ट क्लास की अत्यंत आवश्यकता है। अब स्मार्ट टीवी के माध्यम से बच्चों को विज्ञान, गणित और सामान्य ज्ञान के वीडियो, एनिमेशन और इंटरैक्टिव कंटेंट दिखाए जा सकेंगे। इससे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को भी शहरों जैसी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सकेगी। कार्यक्रम में मौजूद ग्रामवासियों ने बताया कि शैक्षिक क्षेत्र में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों से शिक्षा के प्रति अभिभावकों का विश्वास मजबूत हुआ है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ जगदीश पाठक ने बताया कि स्मार्ट क्लास के जरिए बच्चे अब केवल पाठ्यक्रम की पढ़ाई तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि उन्हें देश–दुनिया की घटनाओं और नई जानकारियों से भी जुड़ने का अवसर मिलेगा। इस स्मार्ट टीवी के लगने से अब कक्षा में पढ़ाई और भी आसान हो जाएगी और कठिन विषयों को चित्रों और वीडियो के माध्यम से समझाया जा सकेगा। इससे बच्चों की सीखने में रुचि बढ़ेगी और उपस्थिति में भी सुधार होगा। इससे विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, रचनात्मक सोच और सामान्य ज्ञान में सुधार होगा। उन्होंने बताया कि विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को बेहतर बनाने और बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

हमारी नई शिक्षा नीति कृतज्ञ ऋषियों की परम्परा की संवाहक– प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय 'परमहंस'

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज में अखिल भारतीय शिक्षा समागम का आयोजन परिसरीय पं. मदन मोहन मालवीय सभागार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में परिसर के सहनिदेशक प्रो. देवदत्त सरोदे ने नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न तथ्य एवं विवरणों से सम्बन्धित व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने प्रस्तुतीकरण द्वारा उन्होंने नवीन शिक्षा नीति की विशेषताओं से परिचित कराया। उन्होंने इस समागम द्वारा छात्र–छात्राओं को उनके मूल से परिचित कराने का सार्थक प्रयास किया। उनके अनुसार यह शिक्षानीति छात्र–छात्राओं में नेतृत्व क्षमता विकसित करने, भारत वर्ष को शिक्षा क्षेत्र के रूप में स्थापित करने एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के ध्येय को समक्ष रखकर विकसित की गई है, जिसमें विद्यार्थियों की सफलता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के साथ ही साथ उनमें अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान, राष्ट्र प्रेम की भावना का विकास एवं स्वाभिमान की भावना को प्रबल बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। परिसर के प्रभारी निदेशक प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नई शिक्षा नीति को व्यवहारिकता एवं उपयोगिता के समन्वय का प्रतीक बताया। उनके अनुसार नई शिक्षा नीति बच्चों में खेल खेल में शिक्षा एवं सीखने की प्रवृत्ति को विकसित करने वाली है। संस्कृत भाषा का व्यापक प्रभाव नई शिक्षा नीति में परिलक्षित होने का उदाहरण देते हुए उन्होंने संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित राजधर्म एवं उनके नियमों को भारतीय न्याय संहिता में समाहित होना बताया। उन्होंने नई शिक्षा नीति को कृतज्ञ ऋषियों की परम्परा का संवाहक एवं पोषक बताया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डॉ. यशवन्त त्रिवेदी द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. अंजनी कुमार पुण्डरीक, डॉ. शुभश्री दास, श्री अंकित मिश्र, श्री राजेश कान्त तिवारी समेत समस्त परिसरीय सदस्य एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे।

कानपुर सेंट्रल स्टेशन पुनर्विकास एवं होल्डिंग एरिया के कार्यों की प्रगति की अपर मंडल रेल प्रबंधक ने की समीक्षा

प्रयागराज। अपर मण्डल रेल प्रबंधक (सामान्य), श्री दीपक कुमार ने कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर चल रहे स्टेशन पुनर्विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की । इस निरीक्षण के दौरान उप मुख्य यातायात प्रबंधक/कानपुर, श्री अकांशु गोविल भी उपस्थित थे।

समीक्षा बैठक के दौरान अपर मण्डल रेल प्रबंधक (सामान्य) ने रेलवे कार्यदायी संस्था तथा विभिन्न संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ पुनर्विकास परियोजना एवं होल्डिंग एरिया की वर्तमान प्रगति, निर्माण कार्यों की गुणवत्ता एवं निर्धारित समय–सीमा के अनुरूप कार्यों के निष्पादन की समीक्षा की। इस अवसर पर रेलवे अधिकारियों द्वारा स्टेशन परिसर में संचालित विभिन्न निर्माण कार्यों, यात्री सुविधाओं के विकास, आधारभूत संरचना के उन्नयन तथा आगामी कार्ययोजना के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रस्तुत की गई। अपर मण्डल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि पुनर्विकास से जुड़े सभी कार्य निर्धारित समय–सीमा के भीतर उच्च गुणवत्ता मानकों के अनुरूप पूर्ण किए जाएँ। उन्होंने निर्माण कार्यों के दौरान यात्रियों की सुरक्षा, सुगम आवागमन तथा आवश्यक यात्री सुविधाओं को निर्बाध बनाए रखने पर विशेष बल दिया। साथ ही संबंधित विभागों एवं कार्यदायी संस्था के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए कार्यों में तेजी लाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि कानपुर सेंट्रल उत्तर भारत के प्रमुख एवं अत्यधिक व्यस्त रेलवे स्टेशनों में से एक है। इसके पुनर्विकास से स्टेशन की आधारभूत संरचना सुदृढ़ होगी तथा यात्रियों को आधुनिक, सुरक्षित, स्वच्छ एवं विश्वस्तरीय सुविधाएँ उपलब्ध हो सकेंगी।

समीक्षा बैठक में वरिष्ठ मण्डल अभियंता (पंचम), श्री अभिषेक तोमर सहित रेलवे के विभिन्न विभागों के अधिकारी, पर्यवेक्षक एवं कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

4,200 करोड़ का एक्सप्रेसवे और पंखों से सूखती सड़क, सपा प्रमुख के एक ट्वीट से मचा बवाल

लखनऊ (संवाददाता)। हाल ही में शुरू हुआ लखनऊ–कानपुर एक्सप्रेसवे अपनी खराब गुणवत्ता को लेकर चर्चाओं में है। 13 जुलाई को जिस एक्सप्रेसवे का बड़ी धूमधाम से उद्घाटन किया गया था, वह महज 20 दिनों के भीतर 5 जगह से धंस चुका है। अब सोशल मीडिया पर एक वीडियो जमकर वायरल हो रहा है, जिसमें मरम्मत के बाद सड़क को सुखाने के लिए बड़े–बड़े पंखों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इस वीडियो को लेकर सियासत तेज हो गई है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एक्स पर वीडियो शेयर करते हुए योगी सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने तंज कसते हुए लिखा कि यह भाजपाई तरक्की की नई हवा है। अखिलेश ने सवाल उठाया कि उद्घाटन के तुरंत बाद सड़क का बार–बार धंसना और पंखों से उसे सुखाना हास्यास्पद है। ऐसे में तेज रफ्तार गाड़ियों के हादसों की जिम्मेदारी कौन लेगा? करीब 4,200 करोड़ रुपए की लागत से बने 63 किलोमीटर लंबे इस एक्सप्रेसवे की हालत देख प्रशासन भी हरकत में आ गया है।

सम्पादकीय........

जन्म-मृत्यु पंजीकरण

यह जरूरी है कि देश में जन्म व मृत्यु से जुड़े आंकड़े प्रामाणिक हों और समय रहते दर्ज कर लिए जाएं। इससे जनसंख्या गणना, मतदाता की विश्वसनीयता और अंततरू विकास योजनाओं के लिये विश्वसनीय आंकड़े जुटा पाना संभव होता है। वहीं दूसरी ओर अवैध घुसपैठियों और विदेशी नागरिकों की पहचान भी संभव हो पाती है। जो कि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी है। इसी आलोक में संसद द्वारा हाल ही में 'जन्म और मृत्यु पंजीकरण(संशोधन) विधेयक' को पारित करना, देश की नागरिक पंजीकरण प्रणाली को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दरअसल, यह संशोधन सुनिश्चित करता है कि जन्म व मृत्यु का पंजीकरण समय रहते कर लिया जाए। यह कानून देर से होने वाले पंजीकरण के लिए सख्त नियम लागू करता है। नये संशोधन के तहत, जन्म व मृत्यु के दो साल बाद रिपोर्ट किए गए मामलों में मौजूदा कार्यकारी मंजूरी की जगह अब प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट के आदेश की आवश्यकता होगी। निस्संदेह, फर्जी पंजीकरण को रोकने की दिशा में सरकार का उद्देश्य सराहनीय है, लेकिन यह संशोधन लोगों की पहुंच और समावेशिता के बाबत कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है। निस्संदेह, आज देश ने सिविल रजिस्ट्रेशन यानी जन्म–मृत्यु पंजीकरण के मामलों में बहुत अच्छी प्रगति की है। आज देश में 99 फीसदी से अधिक जन्म और मृत्यु का रिकॉर्ड रखा जाता है। दरअसल, देश में बड़ी चुनौती सिर्फ रजिस्ट्रेशन की ही नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने की है कि जन्म व मृत्यु होने पर 21 दिन के भीतर सूचना दर्ज कर ली जाए। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि प्रक्रियागत बाधाएं बढ़ाने की बजाय, समय पर रिपोर्टिंग करने को सहज व सरल बनाया जाए। लोगों को इस बाबत जागरूक करने की भी जरूरत है। साथ ही मौजूदा नियमों को सख्ती से लागू करने से अधिक नीतिगत मामलों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सरकार का दावा है कि न्यायिक जांच से पंजीकरण में होने वाली गड़बड़ियों पर रोक लगायी जा सकेगी। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि वर्ष 2023 संशोधनों के तहत कई सरकारी सेवाओं के लिये जन्म प्रमाण पत्र पहचान का मुख्य दस्तावेज बन गया है। हालांकि, इस बाबत दो साल की समय–सीमा चुनने के पीछे की वजह को तार्किक आधार पर नहीं बताया गया है। वहीं कई ऐसे वाजिब कारण हैं जिसके चलते पंजीकरण देर से होता है। उदाहरण के लिये लें तो दूरदराज के इलाकों में जन्म, पलायन और जागरूकता की कमी के कारण भी जन्म–मृत्यु के पंजीकरण में विलंब होता है। लेकिन अब नये कानून से प्रभावित परिवारों के लिये खर्च और देरी, दोनों ही बढ़ सकते हैं। यह विडंबना ही है कि यह बिल संसद के दोनों सदनों में जारी लगातार हंगामे के बीच पास हुआ। जिसकी वजह से इस महत्वपूर्ण बिल पर कोई सार्थक बहस नहीं हो सकी। वास्तव में होना तो यह चाहिए था कि हर नागरिक की कानूनी पहचान को प्रभावित करने वाले कानून की गहनता से पड़ताल की जाती। जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष को बराबर की जिम्मेदारी निभानी चाहिए थी। निस्संदेह, कुशल प्रशासन में कल्याणकारी योजनाओं तक पहुंचने और चुनावी ईमानदारी के लिये एक मजबूत व पारदर्शी नागरिक पंजीकरण प्रणाली अपरिहार्य ही है। वास्तव में इस संशोधन की प्रभावशीलता को सिर्फ धोखाधड़ी रोकने की क्षमता से नहीं देखा जाना चाहिए। सावधानी इस बात को लेकर भी की जानी चाहिए कि कोई भी वास्तविक नागरिक कानूनी पहचान से वंचित न रह जाए। दूसरे शब्दों में कहें तो सुरक्षा उपाय नागरिकों की पहुंच में बाधा नहीं बनने चाहिए। सही मायने में अच्छी गवर्नेंस, प्रशासनिक ईमानदारी और लोगों के अधिकारों, दोनों को ही सुरक्षित रखने में है। यह जरूरी है कि लोग समय पर जन्म व मृत्यु की सूचना का पंजीकरण कराएं, लेकिन इसे दर्ज करने की प्रक्रिया सहज–सरल होनी चाहिए। जिसके लिए लोगों को जागरूक करने की भी जरूरत है। साथ ही अपरिहार्य कारणों से हुए विलंब पर सख्ती करने के बजाय सुधारात्मक प्रयासों को तरजीह दी जानी चाहिए।

गोदी से लठैत भये, पब्लिक लीने दौड़ाय!

राजेंद्र शर्मा

जंतर–मंतर पर केंद्रित जेन जी के हाल के आंदोलन के लगभग सभी प्रेक्षकों ने युवाओं की इस गोलबंदी की अन्य प्रमुख विशेषताओं के अलावा एक खासियत जरूर नोट की है। और यह खासियत है, मुख्यधारा के मीडिया के प्रति खुली होस्टिलिटी या वैर–भाव। गोदी मीडिया और उसमें भी खासतौर पर खबरिया चौनलों ने शुरुआत से इस आंदोलन के विरोध की भूमिका अपनायी। जंतर–मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के पहले, एक दिन के धरने में, इंटरनेट पर उसके करोड़ों समर्थकों में से, कुछ हजार लोगों के ही जुटने के प्रचार के जरिए, इस नयी कोशिश को खारिज करने पर सारा जोर लगा दिया गया। लेकिन, बाद में जब जंतर–मंतर पर अनिश्चितकालीन धरना शुरू हो गया और हफ्ते भर बाद अनिश्चितकालीन भूख हड़तालों का सिलसिला शुरू हुआ, खबरिया चौनलों ने आम तौर पर इस आंदोलन को अनदेखा करने की ही रणनीति अपनायी। यह तब हो रहा था जब सोशल मीडिया पर और जनतंत्र–समर्थक यूट्यब चैनलों के चलते, यह सारी घेरेबंदी भी इस आंदोलन की खबरों को दबा नहीं पा रही थी। नतीजा यह कि जंतर–मंतर पर जमावड़ा बढ़ता गया और गोदी मीडिया के खिलाफ लोगों का गुस्सा भी बढ़ता गया। टीवी चौनलों के माइक देखते ही, गोदी मीडिया हाय–हाय या गो बैक के नारे लगना और चौनलों के कनिष्ठ रिपोर्टरों का ध् रनास्थल से एक तरह से खदेड़ा जाना ही शुरू हो गया। यह पांच साल पहले ऐतिहासिक किसान आंदोलन के समय जो हुआ था, उसी की पुनरावृत्ति थी। फर्क इतना था कि किसान आंदोलन के समय, गोदी मीडिया शुरू से ही उसके खिलाफ दुष्प्रचार छेड़ने की प्रतिक्रिया में, लोगों के बहिष्कार के निशाने पर आया था, जबकि इस बार जन–शत्रु के रूप में उसकी पहचान, उसके जान–बूझकर आंखें फेरने से ही शुरू हो चुकी थी। यह नतीजा था किसान आंदोलन के दौरान, जन–शत्रु के रूप में गोदी मीडिया की पहचान स्थापित होने के बाद से, उसके सत्ता की सेवा के लिए हमेशा जन–विरोधी हमलों के हथियार की भूमिका के लिए ज्यादा से ज्यादा तत्पर होते जाने का। अब गोदी मीडिया सिर्फ इस अर्थ में सत्ता की गोदी में बैठा यानी सत्ता का बचाव करने वाला मीडिया नहीं रहा था कि उसने सत्ताधारियों पर भोंकना बंद कर दिया था। अब वह सत्ता की ओर से, उसके विरोधियों या आलोचकों पर हमले का हथियार बन गया था। अब वह लैप डॉग से, सत्ता का बुलडॉग बन गया था। यह सब तब और खुलकर सामने आ गया, जब लंबे खिंचते धरने और भूख हड़तालियों की बिगड़ती हालत के चलते, मोदी पर दबाव बढ़ने लगा। हर रात इसकी आशंका की रात थी कि पुलिस बल के जरिए, जबर्दस्ती धरना स्थल को खाली कराया जा सकता है। यह सिलसिला 20 जुलाई के संसद मार्च के दिन तक जारी रहा, जब शाह की पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों की विशाल संख्या को तितर–बितर करने के नाम पर, दमन की सारी सीमाएं ही पार कर लीं। उसने बिना वर्दी के बाहरी गुंडों, कील लगी लाठियों और पैलेट गनों व बंदूकों के इस्तेमाल से लेकर, पूरी तरह से अकारण निहत्थे लोगों पर हमले करने तक के सरासर आपराधिक हथकंडों का भी इस्तेमाल किया। इनकी सच्चाई सैकड़ों सेलफोन कैमरों के जरिए, सोशल मीडिया के माध्यम से दुनिया भर में इसके बावजूद पहुंच गयी कि, जंतर–मंतर तथा आस–पास के पूरे इलाके में मोदीशाही ने कई घंटों के लिए इंटरनेट सेवाएं ही बंद करा दी थीं। जाहिर है कि इस दमन की सच्चाई, गोदी मीडिया के बावजूद, सारी दुनिया में पहुंच रही थी। याद रहे कि वांगचुक के धरना स्थल से उठाए जाने के बाद से, चौनलों के कैमरे किसी बड़े एक्शन को कवर करने के उम्मीद में जंतर–मंतर पर पहुंचे तो जरूर थे, लेकिन आंदोलन को कवर करने या कवर करने के लिए नहीं। जैसा कि जंतर–मंतर से लगातार रिपोर्टिंग करते रहे एक समाचार वेबसाइट के पत्रकार ने लिखा, श्वे शिकार पर निकले थेश्। आंदोलन के खिलाफ कोई बाइट, कोई तस्वीर पाएं, तो खबर चलाएं। कहने की जरूरत नहीं है कि इस पूरे दौर में गोदी मीडिया के सचेत रूप से शासन की एक अलग तरह की लाठी की भूमिका में ज्यादा से ज्यादा खुलकर सामने आने से, इस आंदोलन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों ही नहीं, व्यापक स्तर पर आम जनता का भी गोदी मीडिया के साथ विरोध का रिश्ता और पुख्ता तथा तीखा ही हुआ है। गोदी मीडिया के दुर्भाग्य से यह स्थिति, सत्ताधारियों की सेवा के लिए उसकी उपयोगिता को और इस सेवा के बदले में मिलने वाले मेवा की मात्रा को भी तेजी से घटा ही रही है। खबरिया चौनलों के दर्शकों की संख्या से लेकर विज्ञापन राजस्व तक, सब में तेजी से गिरावट हो रही है। संसद मार्च पर बर्बर दमन चक्र, मोदीशाही को उल्टा पड़ गया। उसकी पुलिस बर्बरता की झांकी ही सारी दुनिया ने नहीं देखी, हमारे देश के विभिन्न शहरों में ही नहीं, अनेक विश्व महानगरों में भी, इस आंदोलन के समर्थन में उल्लेखनीय प्रदर्शन हुए। इधर दिल्ली में जंतर–मंतर पर प्रदर्शन जारी था और प्रदर्शनकारियों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। समूचा विपक्ष एक स्वर में संसद में और संसद के बाहर, इस आंदोलन के पक्ष में आवाज उठा रहा था। इसी मुकाम पर, अपनी छवि का और संघ–भाजपा शासन का नुकसान सीमित करने की नीयत से, किसान आंदोलन के बाद एक बार फिर, नरेंद्र मोदी ने युवाओं के आंदोलन के सामने झुकना ही फायदेमंद समझा। मोदी की श्सरकार में इस्तीफे नहीं होते हैंश की अकड़ छोड़कर, धर्मेन्द्र प्रधान से इस्तीफा दिलाया गया, ताकि इस आंदोलन को खत्म कराया जा सके और जंतर–मंतर से आंदोलन खत्म भी हो गया। यहां तक कि गोदी चौनलों पर इस आंदोलन के विश्लेषण के नाम पर, कॉकरोच जनता पार्टी के प्रवक्ताओं के साक्षात्कार भी नजर आने लगे। लेकिन, मजबूरी में झुकने की बात दूसरी है, पर मोदी ने और जाहिर है कि उनके गोदी मीडिया ने भी, अपने खिलाफ बगावत करने वाले युवाओं को दिल से माफ नहीं किया था। नतीजा यह कि न सिर्फ आंदोलन के वापस लिए जाने के समय हुए समझौते के, इस सिलसिले में दायर किए गए सभी केस वापस लिए जाने के वादे को ईमानदारी से पूरा नहीं किया गया, खुद प्रधानमंत्री मोदी का आंदोलन के दौरान अपने लिए कथित रूप से अपशब्द कहे जाने को श्माफ करने का स्वांग भी, झूठा निकला। हार से खिसियाई मोदीशाही की डबल–ट्रिपल इंजन सरकारों से लेकर, संघ प्रायोजित गुंडा वाहनियों तक के जरिए, इस आंदोलन में शामिल हुए युवाओं और खासतौर पर किशोरियों को, उनके वक्तव्यों से लेकर सोशल मीडिया पोस्टों तक के लिए, प्रताड़ित करने और डराने–धमकाने का सिलसिला लगातार जारी है। नोएडा में एक पंद्रह वर्षीया स्कूली छात्रा के परिवार को तो अपना ठिकाना बदलने पर मजबूर होना पड़ा है। राजा से बढ़कर उसका वफादार नजर आने की कोशिश में गोदी मीडिया की इस खेल में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रहा है और युवाओं के इस आंदोलन को बदनाम करने के लिए बहाने गढ़ रहा है। इसमें, 20 जुलाई की घटनाओं में पुलिस को विक्टिम बनाने के जरिए, इस बगावत के लिए युवाओं को अपराधी और मोदी को विक्टिम बनाने का अभियान शामिल है। यह मोदीशाही और उसके गोदी–चढ़ाए मीडिया, दोनों को ही युवाओं की नजरों में पक्का जन–शत्रु बनाता जा रहा है। ताजातरीन विधानसभाई उप–चुनाव के नतीजे और खासतौर पर बांकीपुर सीट से तीन दशक बाद भाजपा की हार तथा दतिया से कांग्रेस की वापसी और सबसे बड़े धन्नासेठों के खबरिया चौनलों के तेजी से बढ़ते घाटे, इसी का इशारा कर रहे हैं।

क्या फिर देश का स्वर्ण भंडार बनेगा अर्थव्यवस्था का सहारा

अरुण कुमार डनायक

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष ने एक बार फिर भारत की आर्थिक संवेदनशीलताओं को उजागर कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की अस्थिर कीमतों के कारण ब्रेंट क्रूड हाल के दिनों में 90 डॉलर प्रति बैरल के आसपास पहुंच गया। तेल की बढ़ती कीमतें सीधे आयात बिल, महंगाई और चालू खाते के घाटे पर दबाव डालती हैं। तेल आयात पर सरकार का नियंत्रण सीमित है, किंतु सोने का आयात ऐसा क्षेत्र है जहां नीति के माध्यम से हस्तक्षेप की संभावना बनी रहती है। इन परिस्थितियों के बीच केंद्र सरकार एक बार फिर स्वैच्छिक स्वर्ण प्रकटीकरण योजना अथवा इससे मिलती–जुलती किसी व्यवस्था पर विचार कर रही है। यदि यह प्रस्ताव साकार होता है, तो तीन दशक बाद भारत अपनी निष्क्रिय स्वर्ण संपदा को आर्थिक शक्ति में बदलने का एक और ऐतिहासिक प्रयोग कर सकता है। ऐसी योजनाएं सामान्यतरू जनता के पास निवेश के रूप में निष्क्रिय पड़े सोनेकृविशेषकर सोने की ईंटों और सिक्कोंकृको औपचारिक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनाने में सहायक होती हैं। इससे सोने के आयात में कमी लाई जा सकती है, विदेशी मुद्रा की बचत हो सकती है तथा चालू खाते के घाटे पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है। यह विचार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उस मितव्ययिता संबंधी अपील से भी जुड़ा माना जा रहा है, जिसमें उन्होंने नागरिकों से एक वर्ष तक त्योहारों पर सोना खरीदने से परहेज करने, ईंधन की बचत करने और अनावश्यक विदेशी यात्राएं कम करने का आग्रह किया था। भारत में सोना निवेश के साथ–साथ हमारी सांस्कृतिक, धार्मिक और पारिवारिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

अनुमान है कि भारतीय परिवारों के पास दुनिया का सबसे बड़ा निजी स्वर्ण भंडार है, जिसका बड़ा हिस्सा निष्क्रिय रूप से घरों और तिजोरियों में पड़ा रहता है। यदि इस संपदा का एक छोटा भाग भी औपचारिक वित्तीय व्यवस्था में आ जाए तो यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। भारतीय इतिहास बताता है कि राष्ट्रीय संकट के समय सोना देश की आर्थिक सुरक्षा का आधार भी बना है। 1991 का विदेशी मुद्रा संकट इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। उस समय भारत के विदेशी मुद्रा भंडार घटकर लगभग 1.1 अरब डॉलर रह गए थे, जो केवल दो–तीन सप्ताह के आवश्यक आयात के लिए पर्याप्त थे। ऐसी विकट परिस्थिति में भारतीय रिजर्व बैंक और सरकार ने अभूतपूर्व निर्णय लेते हुए लगभग 46.91 टन सोना गिरवी रखकर 405 मिलियन डॉलर की विदेशी मुद्रा जुटाई। यह निर्णय तत्कालीन परिस्थितियों में अत्यंत कठिन था, किंतु इसी ने भारत को आर्थिक दिवालियेपन से बचाया और आर्थिक उदारीकरण के नए युग का मार्ग प्रशस्त किया। 1993 में संकट से उबरने के बाद सरकार ने श्गोल्ड बॉन्ड योजनाश् शुरू की। इसके तहत न्यूनतम 500 ग्राम सोना पांच वर्ष के लिए जमा करना अनिवार्य था। परिपक्वता पर वही सोना लौटाया जाता और प्रति ग्राम 40 रुपये का एकमुश्त ब्याज दिया जाता।

लघुकथा

अमंगल

अभी बाबूजी घर से निकले ही थे कि बड़बड़ाते हुए उल्टे पाँव घर लौट आए और नीलू को आवाज़ देकर बोले, “बेटा, एक गिलास पानी देना।” उनकी इस आदत से घर में सभी लोग परिचित थे और जिया से इस बात पर कई बार कहासुनी भी हो चुकी थी, क्योंकि उन पर अंग्रेज़ी शिक्षा का काफ़ी प्रभाव था। इसलिए इस वक़्त बाबूजी का वापस लौटना जिया को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा और उसका नाराज़ होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि उनके लौट आने से एक ज़रूरी ट्रेन छूट गई थी। कारण केवल इतना था कि वे कॉलोनी में रहने वाले मुन्ने के दस वर्षीय काने बेटे के दर्शन कर आए थे। ख़ैर, बाबूजी बस से निकल गए।

अभी जिया टेलीविज़न खोलकर समाचार देख ही रही थी कि उसी ट्रेन के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर सामने आ गई। “ओह! यह क्या हुआ? चलो, बाबूजी आज बाल-बाल बच गए!” इन्हीं शब्दों के साथ वह इस बात को सोचने के लिए मजबूर हो गई कि “उस काने का दर्शन करना अमंगल कैसे हो सकता है, जिसे बाबूजी अक्सर देख लेने पर हज़ारों गालियाँ देते हैं, जबकि आज उसी के दर्शन से वे बाल-बाल बच गए!”

रचना सक्सेना
प्रयागराज

मदरसों पर विवादित टिप्पणी

जंतर–मंतर पर हुए छात्र आंदोलन में केवल पेपर लीक का विरोध और शिक्षा–परीक्षा प्रणाली में सुधारों की आवाज ही नहीं उठी, बल्कि इनके साथ–साथ देश में जबरन कायम की गई अन्य समस्याओं पर भी नाराजगी देखने मिली। मीडिया का सरकार की चाटुकारिता में लगा होना, मणिपुर में अशांति, बेरोजगारी, महंगाई और हिंदू–मुस्लिम के बीच बैर–भाव बढ़ाकर सत्ता पर टिके रहने की चालाकी, हर मुद्दे पर भाजपा और मोदी सरकार की आलोचना की गई। इस आंदोलन ने बता दिया कि नयी पीढ़ी सांप्रदायिक उन्माद की शिकार नहीं है। वह भाजपा की इस रणनीति में पिछली पीढ़ी की तरह फंसी हुई नहीं है। लेकिन भाजपा जंतर–मंतर से निकले सबक को समझ ही नहीं रही है। उसे चुनाव जीतने और सत्ता पर बने रहने के लिए ले–देकर एक ही मुद्दा मिलता है कि किसी भी तरह अल्पसंख्यक विरोधी खासकर मुसलमानों के खिलाफ माहौल बनाया जाए, ताकि हिंदू वोट उसके खाते में आए। अभी उत्तरप्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का एक बयान आया है कि श्मदरसा चाहे बांग्लादेश का हो, पाकिस्तान का हो या भारत का, मदरसे अघोषित रूप से आतंकवाद पैदा करते हैं।श् इस बयान को फौरन ही हिंदूवादी संगठनों का समर्थन भी मिल गया। कहा जा रहा है कि मौर्य विहिप कार्यकर्ता के तौर पर काम कर चुके हैं, इसलिए उन्हें जमीनी हकीकत पता है। ऐसे खोखले तर्कों पर सिर पीटने के अलावा और कुछ किया ही नहीं जा सकता। बांग्लादेश और पाकिस्तान की चिंता तो वहां की सरकारें करें, लेकिन अगर भारत के मदरसों में आतंकवादी तैयार होते हैं, तो फिर पिछले 12 सालों से मोदी सरकार इस बारे में कुछ कर क्यों नहीं पाई। केशव प्रसाद मौर्य को इसके आंकड़े भी दे देने चाहिए कि उप्र के मुख्यमंत्री होने के नाते आदित्यनाथ योगी ने ऐसे कितने मदरसों की शिनाख्त की है और कितने आतंकवादियों को वहां बनते हुए पकड़ा है। सबसे पहले तो मौर्य को नरेन्द्र मोदी और अमित शाह से पूछना चाहिए कि सीबीआई, आईबी और रॉ जैसी तमाम जांच एजेंसियां यह बात अब तक आधिकारिक रूप से क्यों नहीं कह सकीं। क्योंकि अगर आतंकवादी मदरसों में बनते हैं, तो इन एजेंसियों को इसकी जानकारी होगी ही। जाहिर है केशव प्रसाद मौर्य ऐसा कुछ नहीं करेंगे, क्योंकि वे भी जानते हैं कि उनके बयान का मकसद केवल सांप्रदायिक तनाव फैलाना है ताकि चुनाव में फायदा मिल सके। जंतर–मंतर पर हुए आंदोलन के नतीजे देखने के बाद भी भाजपा में बैठे लोग यह समझ नहीं रहे हैं कि देश अब ऐसी सियासी चालबाजियों में नहीं आएगा। कम से कम नयी पीढ़ी के मतदाता तो मुसलमान को कोसने के लिए भाजपा को वोट नहीं देने वाले। गौरतलब है कि उत्तरप्रदेश में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं, जिसकी तैयारी में भाजपा लगी हुई है। उसे किसी भी कीमत पर अपनी सत्ता बचानी है। 2024 के लोकसभा चुनावों में तो भाजपा को यहां बड़ा झटका लगा था, क्योंकि यहां की कुल 80 सीटों में भाजपा के पास केवल 33 सीटें आईं। जबकि 37 सीटें समाजवादी पार्टी और छह सीटें कांग्रेस की यानी 43 सीटें इंडिया गठबंधन को मिलीं। भाजपा के लिए यह अप्रत्याशित था कि अयोध्या में राम मंदिर बनाने के बावजूद फैजाबाद सीट समाजवादी पार्टी के खाते में चली गई।

वाराणसी सीट पर भी नरेन्द्र मोदी को कांग्रेस प्रत्याशी अजय राय से कड़ी टक्कर मिली थी और आखिरी चरणों की मतगणना में वे जीत पाए थे। यानी भाजपा के सामने डर बना हुआ था कि कहीं मोदी भी अपनी सीट न हार जाएं। लोकसभा और विधानसभा दोनों चुनावों के मुद्दे अलग होते हैं और जनता भी वोट उसी हिसाब से देती है। मगर अब जेन जी आंदोलन के बाद देश के राजनीतिक मिजाज में तब्दीली आ चुकी है। इसलिए भाजपा का डर और बढ़ा हुआ है। हैरानी इस बात की है कि इस डर का सही इलाज करने की जगह भाजपा उसे खुलकर दिखा रही है। वर्ना केशव प्रसाद मौर्य ऐसे बयान देने से पहले विचार जरूर करते। अभी विधानसभा के मानसून सत्र में सरकार मदरसा शिक्षा परिषद अधिनियम 2004 संशोधन विधेयक लाने जा रही है। इसके तहत मदरसों में उच्च शिक्षा वाले कामिल (स्नातक) और फाजिल (स्नातकोत्तर) पाठ्यक्रम बंद किए जाएंगे और पढ़ाई केवल 12वीं (आलिम) तक सीमित होगी। इस पर पहले ही विवाद चल रहा है और शायद ऐसे में मौके पर चौका मारने की फिराक में केशव प्रसाद मौर्य ने अवांछित बयान दे दिया। मौर्य ने मदरसों पर टिप्पणी करने से पहले यह नहीं सोचा कि राम मंदिर में चढ़ावा चोरी के कारण भाजपा और संघ दोनों की साख पर कितना बट्टा लग चुका है। मदरसों का हिसाब–किताब तो सरकार कर लेगी, लेकिन क्या मंदिर का सही हिसाब पेश कर पाएगी। अभी संसद सत्र के दौरान रोजाना ही परिसर में चढ़ावा चोरी पर भाजपा को घेरा जा रहा है। कई बार यह प्रहसन किया गया कि विपक्षी सांसदों ने नकली दान पात्र में चढ़ावा दिया और फिर कोई एक उसे लेकर भाग गया। ऐसे ही प्रहसन को पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने साधु जैसा भेष धरकर किया तो इसके खिलाफ उन पर और राहुल गांधी पर एफआईआर दर्ज की गई, और इसके साथ ही पप्पू यादव पर उनके घर पर हो रही प्रेस कांफ्रेंस के दौरान हमला भी किया गया। हमलावर ने चप्पल फेंकी तो उसे पकड़ा गया और बताया जा रहा है कि उसके पास चाकू भी था। कमाल की बात है कि छात्रों पर डंडों बरसाने वाली दिल्ली पुलिस विपक्ष के सांसद की सुरक्षा में ऐसी नाकाम रही कि उसके घर पर असामाजिक तत्व घुस आए। बहरहाल, पप्पू यादव सुरक्षित हैं, लेकिन उन्होंने कहा है कि उन्हें मारने की धमकियां लगातार मिल रही हैं। अब केशव प्रसाद मौर्य को यह भी पता लगा लेना चाहिए कि राम मंदिर का चढ़ावा चोरी करने वालों के खिलाफ जो आवाज उठाए और उस पर हमला हो, तो हमलावर को क्या कहा जाए। वे चाहें तो धर्मेन्द्र प्रधान से सीख ले सकते हैं जिन्होंने पेपर चोरों के खिलाफ आवाज उठाने वालों को दहशतगर्द यानी आतंकवादी कह दिया था। मौर्य रमेश बिधूड़ी से भी सीख सकते हैं जिन्होंने जंतर–मंतर पर आए आंदोलनकारियों को पंक्चर बनाने वालों की औलादें बताया है।

`एक वरदान', आखिर क्या है इसका मतलब ? बिग बॉस 20 के नए टीजर में सलमान खान ने दिया बड़ा हिंट

सलमान खान का शो बिग बॉस फिर से चर्चाओं में आ गया है। गुरुवार को मेकर्स ने इसका नया टीजर रिलीज किया है, जिसके बाद फैंस की एक्साइटमेंट और बढ़ गई है। इस बार शो को लेकर सलमान खान ने एक नया हिंट दिया है– 'एक वरदान'। टीजर में सलमान कहते नजर आते हैं कि इस सीजन में कुछ खास होने वाला है, जो किसी की किस्मत बदल सकता है। अब फैंस के मन में सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर ये 'वरदान' क्या है और इससे किसकी जिंदगी बदलेगी? इस नए क्लू के बाद शो को लेकर एक्साइटमेंट और भी बढ़ गई है। हर कोई जानना चाहता है कि इस बार बिग बॉस 20 में क्या नया ट्विस्ट देखने को मिलेगा। बता दें, करीब एक दशक बाद शाहरुख खान और सलमान खान एक बार फिर बिग बॉस के मंच पर साथ नजर आ सकते हैं। इससे पहले साल 2015 में फिल्म दिलवाले के प्रमोशन के दौरान दोनों बिग बॉस 9 में साथ दिखाई दिए थे। बिग बॉस के छह सीजन सितंबर 2026 से जियो स्टार टेलीविजन नेटवर्क पर शुरू होंगे।

> बता दें, करीब एक दशक बाद शाहरुख खान और सलमान खान एक बार फिर बिग बॉस के मंच पर साथ नजर आ सकते हैं। इससे पहले साल 2015 में फिल्म दिलवाले के प्रमोशन के दौरान दोनों बिग बॉस 9 में साथ दिखाई दिए थे।

फिर लीक हुआ `वाराणसी' का सीन ? महेश बाबू का एक्शन वीडियो वायरल, फैंस में बढ़ी हलचल

महेश बाबू के जन्मदिन (8 अगस्त) से ठीक पहले फिल्म का एक नया वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसे वाराणसी घाट पर शूट हुए एक बड़े एक्शन सीन का हिस्सा बताया जा रहा है। फिल्म के अनाउंसमेंट के बाद से ही 'वाराणसी' बार–बार लीक का शिकार होती रही है। पहले सेट की तस्वीरें, अनाउंसमेंट वीडियो के कुछ हिस्से और पृथ्वीराज सुकुमारन का लुक भी ऑनलाइन सामने आ चुका है। अब यह नया वीडियो सामने आने के बाद फैंस के बीच और भी एक्साइटमेंट बढ़ गई है। वायरल हो रहे इस वीडियो में महेश बाबू खून से लथपथ नजर आ रहे हैं, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि यह फिल्म के किसी बड़े एक्शन सीन का हिस्सा हो सकता है। हालांकि, मेकर्स ने अभी तक इस वीडियो की सच्चाई पर कोई बयान नहीं दिया है। इससे पहले भी फिल्म के 'उग्रभट्टी गुफा' वाले सीन से जुड़ा एक लीक सामने आया था, जिसे पोस्टर्स और अनाउंसमेंट वीडियो में थोड़ी झलक के तौर पर दिखाया गया था। उस सीन में बड़े–बड़े पत्थर, नक्काशीदार खंभे और ब्लू–स्क्रीन सेटअप नजर आया था, जिससे साफ था कि इसमें भारी वीएफएक्स का इस्तेमाल किया जाएगा। अनाउंसमेंट वीडियो में 'छिन्नमस्ता देवी' की एक झलक भी दिखाई गई थी, जिससे यह गुफा वाला सीन फिल्म का सबसे खास हिस्सा माना जा रहा है। लगातार हो रहे इन लीक्स की वजह से 'वाराणसी' इन दिनों काफी चर्चा में है। यह फिल्म अभी प्रोडक्शन में है और अब तक इसकी कई तस्वीरें और वीडियो आधिकारिक रिलीज से पहले ही सामने आ चुके हैं। राजामौली ने हाल ही में फिल्म के बारे में बताया था कि 'वाराणसी' एक बड़ी एडवेंचर फिल्म होगी, जिसकी कहानी वाराणसी से शुरू होकर अंटार्कटिका, अफ्रीका और प्राचीन रोम तक जाएगी। इसमें टाइम–ट्रैवल का एंगल भी होगा और कहानी फिर से वाराणसी में आकर खत्म होगी। फिल्म की करीब 80प्रतिशत शूटिंग पूरी हो चुकी है और बड़े एक्शन सीन भी शूट हो गए हैं। बाकी शूटिंग और पोस्ट–प्रोडक्शन का काम साथ–साथ चल रहा है। इस फिल्म में महेश बाबू, प्रियंका चोपड़ा और पृथ्वीराज सुकुमारन नजर आएंगे। यह राजामौली और महेश बाबू की पहली फिल्म है। फिल्म के कुछ खास सीन प्ड।ग कैमरों से शूट किए जा रहे हैं, ताकि इसका स्केल और भी बड़ा दिखे। 'वाराणसी' 7 अप्रैल 2027 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

सलमान निभाने वाले थे राम का किरदार, सीता के रोल में कास्ट हुई थीं सोनाली, जानें क्यों अधूरी रह गई यह फिल्म

अभिनेता–निर्देशक सोहेल खान भी पौराणिक कथा रामायण पर फिल्म बना रहे थे। इसमें उन्होंने सलमान खान को भगवान राम और सोनाली बेंद्रे को सीता के रोल में कास्ट किया था मगर फिल्म का निर्माण नहीं हो सका। जानें क्या थी इसकी वजह? सोहेल खान के एक पुराना प्रोजेक्ट इन दिनों चर्चा में है। रिपोर्ट्स के मुताबिक नब्बे के दशक में सोहेल भी महाकाव्य रामायण पर एक फिल्म बनाने जा रहे थे। फिल्म की शूटिंग लगभग 40 प्रतिशत हो चुकी थी। फिल्म में सलमान खान जहां भगवान राम के किरदार में थे। वहीं सोनाली बेंद्रे माता सीता के रोल के लिए चुनी गई थीं। सोहेल की फिल्म 'रामायण' में पूजा भट्ट को भी एक महत्त्वपूर्ण किरदार में थीं। मगर शूटिंग के दौरान सोहेल और पूजा की नजदीकियां बढ़ गईं। इसका खुलासा खुद पूजा ने एक इंटरव्यू में किया। सोहेल के पिता सलीम खान के दखल के बाद अभिनेता और पूजा के बीच रिश्ता ज्यादा दिन टिक नहीं पाया। इसके बाद दोनों के प्रोफेशनल रिलेशनशिप भी बिगड़ गए और आखिरकार फिल्म ठंडे बस्ते में चली गई। नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित फिल्म रामायण मेगा बजट मूवी है, जिसे करीब 4000 करोड़ रुपये की लागत के साथ बनाया जा रहा है। फिल्म में रणबीर कपूर, साई पल्लवी, यश समेत कई बड़े अभिनेता हैं। फिल्म दो हिस्सों में रिलीज होगी। पहला हिस्सा इस साल दिवाली पर आएगा और दूसरा हिस्सा अगले साल दिवाली पर दस्तक देगा।

शो से बाहर निकलने के बाद वो तेजस्वी प्रकाश ने शिवांगी संग रिश्ते पर तोड़ी चुप्पी

लॉक अप 2 नेटफ्लिक्स का रियलिटी शो अब ग्रैंड फिनाले के बहुत करीब पहुंच चुका है और इसी बीच बड़े–बड़े ट्विस्ट देखने को मिल हैं। हर्षद चोपड़ा का शो से बाहर होना दर्शकों के लिए सबसे बड़ा सरप्राइज साबित हुआ। खास बात यह रही कि पहले फाइनलिस्ट बनने के बावजूद उन्होंने अपनी जगह शिवांगी जोशी को सौंपने का फैसला किया और खुद बाहर हो गए। शो से निकलने के बाद हर्षद ने पहली बार अपनी निजी जिंदगी, साथी कंटेस्टेंट्स के साथ रिश्तों और शिवांगी जोशी के साथ अपनी बॉन्डिंग को लेकर खुलकर बात की। शो से बाहर निकलने के बाद वो तेजस्वी प्रकाश के शो का हिस्सा बने। इस दौरान उन्होंने लॉक अप 2 में बिताए दिनों को लेकर बात की। इंटरव्यू के दौरान जब उनसे पुछा गया कि क्या आप बाहर निकलने के बाद किसी प्रतियोगी से मिलना चाहेंगे तो उन्होंने बिना हिचकिचाए मना कर दिया। उन्होंने बोला की वो शो खत्म होने के बाद किसी से मिलना नहीं चाहेंगे। इसके बाद उन्होंने बोला कि मेरा चौप्टर यही खत्म हो गया है और अब वो सिर्फ अपने करियर पर फोकस करेंगे। बातों ही बातों में जब सवाल शिवांगी जोशी पर गया तो तेजस्वी ने दोनों के रिश्ते को लेकर भी सवाल पूछे। उन्होंने पूछा की सोशल मीडिया पर हर जगह दोनों के रिश्ते की चर्चा हो रही है तो क्या आप दोनों एक–दूसरे को डेट कर रहे हो ? इसके बाद हर्षद ने ऐसा जवाब दिया कि हर कोई सुनकर काफी हैरान रह गया। हर्षद ने कहा की 'मैं उससे सच में प्यार करता हूं, लेकिन मैं उसके प्यार में नहीं हूं ' उनका यह जवाब काफी बवदनिपवद वाला था। इसे सुनने के बाद हर कोई हैरान रह गया। जब तेजस्वी ने इसका मतलब पूछा तो उन्होंने बताया कि किसी को सम्मान देना और किसी के प्यार में होना, दोनों बहुत अलग हैं। किसी को सम्मान देना और और ख्याल रखने को प्यार नहीं कहा जा सकता। आपको बता दें की शो के दौरान फैंस ने दोनों की जोड़ी को खूब प्यार दिया था और दोनों की केमिस्ट्री ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया। ऐसा इस वजह से शो के दौरान जितने भी उतार–चढ़ाव आए, दोनों एक दूसरे का सहारा बने खड़े रहे। उनके इस कदम को दर्शकों ने सच्ची दोस्ती, भरोसे और निस्वार्थ समर्थन की मिसाल के रूप में देखा।

क्या सच में प्रीति जिंटा के प्यार में पागल थे ब्रेट ली? 15 सालों बाद अब विदेशी क्रिकेटर ने तोड़ी चुप्पी

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली एक बार फिर चर्चा में आ गए हैं। क्रिकेट के अलावा उन्होंने बॉलीवुड में भी अपनी पहचान बनाने की कोशिश की थी, हालांकि अभिनय के क्षेत्र में उन्हें खास सफलता नहीं मिली। इसी दौरान उनका नाम अभिनेत्री प्रीति जिंटा के साथ जोड़ा जाने लगा और दोनों के रिश्ते को लेकर कई तरफ की अटकलें सामने आईं। अब करीब 16–17 साल बाद ब्रेट ली ने इन अफवाहों पर पहली बार खुलकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि उनके और प्रीति जिंटा के बीच कभी भी प्रेम संबंध नहीं था। ब्रेट ली के मुताबिक, दोनों सिर्फ अच्छे दोस्त हैं और वह प्रीति की हमेशा से बहुत इज्जत करते हैं। एक इंटरव्यू के दौरान जब ब्रेट ली से 2000 के दशक में उनके और प्रीति जिंटा के रिश्ते को लेकर उड़ने वाली अफवाहों पर सवाल किया गया तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि सबसे बड़ी खबर यही है कि उन्होंने कभी किसी बॉलीवुड अभिनेत्री को डेट नहीं किया। ब्रेट ली ने साफ किया था कि उनके और प्रीति के बीच हमेशा सिर्फ अच्छी दोस्ती रही है जो आज भी बरकरार है। उन्होंने बताया की उस समय प्रीति पंजाब किंग्स की सह–मालकिन थीं और वे उन्हें एक बेहद बुद्धिमान और सम्मानित महिला मानते हैं। ब्रेट ली ने यह भी कहा की ऐसी अफवाहों ने उन्हें कभी प्रभावित नहीं किया क्योंकि उन्हें हमेशा सच्चाई पता थी। उनके मुताबिक, लोग अपनी ओर से अनुमान लगाते रहते हैं लेकिन उन्होंने कभी इन बातों को गंभीरता से नहीं लिया। आपको बता डे की प्रीति जिंटा और ब्रेट ली के रिश्ते को लेकर साल 2008 से 2011 के बीच कई तरह की चर्चाएं होती रहीं। उस दौरान ब्रेट ली आई.पी.एल में पंजाब किंग्स की तरफ से खेल रहे थे। दोनों को एक बार मुंबई के एक रेस्टोरेंट में साथ देखा गया, जिसके बाद उनके अफेयर की खबरों ने काफी जोर पकड़ लिया। हालांकि, साल 2010 में प्रीति ने इन सभी अटकलों और विराम लगाते हुए साफ कहा था कि उनका और ब्रेट ली का रिश्ता केवल दोस्ती तक ही सीमित है। उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए यह भी लिखा था कि हर साल उनके नाम को ब्रेट ली के साथ जोड़ना पूरी तरह निराधार और पुरानी बात है। आपको बता दें की दोनों अब अपनी–अपनी शादी में खुश हैं। ब्रेट ली की लाइफ की बात की जाए तो उन्होंने 2006 में एलिजाबेथ केम्प से शादी कर ली थी और उनका एक बेटा है लेकिन उनकी शादी ज्यादा देर टिकी नहीं और 2009 में तलाक ले लिया। इसके बाद 2014 में उन्होंने दूसरी शादी कर ली। प्रीति की बात करें तो उन्होंने 2016 में लॉस एंजिल्स में जीन गुडइनफ से शादी की थी। इसके बाद 2021 में सरोगेसी के माध्यम से वो जुड़वां बच्चों की मां बनीं।

घर में बनाएं लहसुन–अदरक का पेस्ट, महीनेभर करें स्टोर

आजकल के बिजी लाइफ शेड्यूल को सेट करने के लिए महिलाओं को अक्सर कुछ चीजें पहले से रेडी करके रखनी होती है। खासतौर पर रसोई में खाना पकाने के लिए वो कई बार रेडीमेड चीजों को यूज करती हैं। जिससे कि टाइम बचे और खाना टेस्टी बनें। लहसुन को छीलने में बहुत वक्त लगता है। इससे बचने के लिए अक्सर रेडीमेड जिंजर–गार्लिक का पेस्ट महिलाएं किचन में रखती हैं। जिसमे प्रिजर्वेटिव मिला होता है। अगर आप इन मार्केट वाले प्रिजर्व जिंजर–गार्लिक पेस्ट को यूज नहीं करना चाहती तो घर में ही अदरक और लहसुन के पेस्ट को बनाकर रख लें। ये महीनेभर तक खराब नहीं होगे। बस इन स्टेप को फॉलो करें।

जिंजर–गार्लिक पेस्ट के लिए सामग्री

100 ग्राम लहसुन

75 ग्राम अदरक

नमक एक चम्मच

2 चम्मच तेल

1 चम्मच व्हाइट विनेगर

जिंजर गार्लिक पेस्ट बनाने की विधि

–सबसे पहले करीब सौ ग्राम लहसुन को छील लें।

–छीलकर इन सारे लहसुन को धूप में रख दें। जिससे कि लहसुन का पानी सूख जाए और ये थोड़े ड्राई हो जाएं।

–अदरक को धोकर अच्छी तरह से छील लें।

–छीलने के बाद धोएं और कपड़े से पानी पोंछकर कुछ देर के लिए पानी में डाल दें।

–जब दोनों चीज में एक दिन तक धूप लग जाए तो मिक्सी के जार में पहले लहसुन और फिर अदरक का बारीक पेस्ट बना लें।

–ध्यान रहे कि पेस्ट बनाने के लिए पानी का इस्तेमाल ना करें।

–किसी कांच के बाउल या जार में इस पेस्ट को निकालें।

–इसमे नमक और तेल मिक्स करें।

–सबसे आखिर में दो चम्मच व्हाइट विनेगर डालें और ढक्कन बंद कर दें।

–इस पेस्ट को फ्रिज में रख दें।

–जब जरूरत हो तो सूखे चम्मच से पेस्ट निकालें और बाकी फ्रिज में डाल दें। ये पेस्ट फ्रिज में आराम से 15–20 दिन तक खराब नहीं होंगे। और खाने का स्वाद भी बढ़ाएंगे।

पिंपल और दाग–धब्बों को हल्का कर देगा ये फेस मास्क, बस रोज वाटर में मिलाएं ये चीज

साफ–सुथरी त्वचा हर किसी की चाहत होती है। लड़के हो या लड़कियां, हर कोई पिंपल और दाग–धब्बों से परेशान रहते हैं। जिसका कारण कभी केमिकल वाले प्रोडक्ट होते हैं तो कभी धूल–मिट्टी और प्रदूषण। वहीं कई बार गलत खानपान और हार्मोंस की वजह से भी चेहरे पर पिंपल दिखने लगते हैं। जो स्किन पर धब्बों को छोड़ जाते हैं। फेस पर दिख रहे ये काले धब्बे जरा भी अच्छे नहीं लगते। इन डार्क स्पॉट और पिंपल से छुटकारा पाना है तो बहुत सारी चीजें नहीं बस फ्रिज में रखी इस चीज को लगा लें।

बनाएं दही का फेस पैक

दही नेचुरल क्लींजर है लेकिन बहुत सारे लोग इस नेचुरल क्लींजर को इग्नोर करते हैं। अगर चेहरे पर क्लिस्टर क्लीयर ग्लो चाहिए तो सप्ताह में दो से तीन बार दही से फेस को क्लींन किया जा सकता है। साथ में बस इस चीज को मिला लें।

बनाएं रोज वाटर के साथ फेस पैक

दही और रोज वाटर को मिलाकर फेस पैक तैयार कर लें। इस फेस पैक को चेहरे पर लगाएं और करीब आधे घंटे के लिए छोड़ दें। फिर हल्के गुनगुने पानी से चेहरे को धो दें। ये चेहरे के ब्लैक हेड्स हटाने के साथ ही पिंपल को कम करने और दाग–धब्बों को हल्का करने में मदद करेगी।

रोज वाटर से दूर होंगे पिंपल

रोजाना चेहरे को फेस वाश से धोने के बाद कॉटन बॉल्स में लेकर रोज वाटर को लगाने से पिंपल कम होने में मदद मिलती है। साथ ही नए पिंपल भी निकलना बंद हो जाते हैं।

शादी के बाद लड़कियों के गुस्सैल और चिड़चिड़ा होने के पीछे जिम्मेदार होते हैं ये 5 कारण

शादी के बाद महिला हो या पुरुष, दोनों के जीवन में कई तरह के बदलाव आते हैं। लेकिन पुरुषों की तुलना में महिलाओं का जीवन शादी के बाद काफी ज्यादा बदल जाता है। कोई भी लड़की जिस दिन से शादी करके ससुराल की दहलीज में कदम रखती हैं, उसी पल से उसके व्यक्तित्व में कई तरह के बदलाव आने शुरू हो जाते हैं। शादी के बाद ससुराल में लड़की अपने नए परिवार के लिए खुद को बदलने की कोशिश करती है, घर के नए सदस्यों के अनुसार काम करती है, जो शादी से पहले नहीं किया वो सबकुछ करती है। लेकिन इन सब बातों से अलग क्या आप जानते हैं वो कौन से 5 कारण होते हैं जिसकी वजह से लड़कियां शादी के बाद गुस्सैल और चिड़चिड़ी बनने पर मजबूर हो जाती हैं। आइए जानते हैं।

घर और ससुराल के माहौल में फर्क–

शादी के बाद कई लड़कियों को यह महसूस होता है कि उनके मायके और ससुराल के रहन–सहन, सोने, जागने, खाने–पीने में काफी फर्क है। अपने घर में जहां लड़की बेबाकी से हर बात बोल लिया करती थी वहीं ससुराल में अब उसे वैसा माहौल नहीं मिल पा रहा है। जिसकी वजह से कई बार उसके नेचर में गुस्सा और चिड़चिड़ापन आने लगता है।

ससुराल में प्यार और सम्मान का ना मिलना–

अपना परिवार छोड़कर ससुराल आई लड़की को जब नए घर में मायके जैसा प्यार और सम्मान नहीं मिलता, तो वो खुद को बहुत बेबस महसूस करती है। ससुराल वालों के खराब व्यवहार और तानों की वजह से भी वो परेशान होकर गुस्से में रहना शुरू कर देती है।

जॉब छूटने का कारण–

अगर शादी के बाद लड़की को किसी वजह से अपनी जॉब छोड़नी पड़ती है और अपने जरूरी खर्चों को पूरा करने के लिए अपने पति या उसके परिवार पर निर्भर रहना पड़ता है, तो अपनी इस फाइनेंशियल इंडिपेंडेंस के खत्म होने की वजह से भी उसमें गुस्सा, नाराजगी, चिड़चिड़ापन आ सकता है।

सपने पूरे न होने पर–

अगर लड़की शादी से पहले कोई अच्छा कोर्स या हायर एजुकेशन लेना चाहती थी लेकिन शादी होने की वजह से ऐसा नहीं कर पाई तब भी वो अंदर ही अंदर कुढ़ने लग जाती है, उसका किसी काम में मन नहीं लगता है और स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लग जाता है।

पति का साथ ना मिलना–

एक लड़की शादी के बाद कोई भी काम करने के लिए सबसे ज्यादा अपने पति पर निर्भर रहती है। लेकिन शादी के बाद उसे अपने पति का ही सपोर्ट नहीं मिलता तो भी उसका स्वभाव गुस्से वाला हो जाता है।

अपने बच्चों की कड़ी मेहनत और पढ़ाई में ना बनो रोड़ा, एक मां को लेकर कोर्ट ने क्यों कहा ऐसा?

दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि अपने बच्चों की भलाई के लिए एक मां की चिंता को अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता तथा बच्चों को होने वाले "मनोवैज्ञानिक आघात" को लेकर मां की आशंका को उनकी (बच्चों की) शिक्षा के राह में बाधा नहीं बनने देना चाहिए। उच्च न्यायालय की यह टिप्पणी एक महिला द्वारा अपने बच्चों को ब्रिटेन के स्कूल में भेजने के लिए उसके और उससे अलग रह रहे पति द्वारा लिये गए 'संयुक्त निर्णय' में हस्तक्षेप करने से इनकार करने के निचली अदालत के आदेश के खिलाफ अपील पर सुनवाई करते समय आई।

मां ने दलील दी कि अलग होने के कारण दोनों बच्चों को मनोवैज्ञानिक आघात हो सकता है और इसलिए उन्हें यहीं ब्रिटिश स्कूल में दाखिला दिया जाना चाहिए या ब्रिटेन में उसी स्कूल में भेजा जाना चाहिए। न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि यह बच्चों के हित में है कि उसे "टूटे हुए घर के बोझिल माहौल" से निकालकर उचित शिक्षा और स्वस्थ विकास के अच्छे अवसर के लिए एक जगह पर रखा जाए।

बच्चों के साथ अपनी बातचीत के आधार पर, अदालत ने पाया कि वे विदेश में पढ़ने के इच्छुक थे तथा कड़ी मेहनत के माध्यम से अपने संबंधित स्कूलों में प्रवेश पाने में सक्षम थे, तथा शुरुआत में मां ने खुद पिता के साथ संयुक्त रूप से उन्हें अध्ययन के लिए विदेश जाने की अनुमति देने का निर्णय लिया था। पीठ ने अपने हालिया आदेश में कहा, "तो मामला यह है कि, अपीलकर्ता मां की यह आशंका कि वे (बच्चे) मनोवैज्ञानिक आघात से पीड़ित हो सकते हैं, उसके (मां के) अपने डर और चिंता से पैदा हुई प्रतीत होती है, जिसे बच्चों तक प्रसारित करने या उनके भविष्य के शैक्षिक मार्ग में बाधा बनाने की आवश्यकता नहीं है।"

पीठ में न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा भी शामिल हैं। पीठ ने कह–, "बच्चों की भलाई के लिए एक मां की चिंता को कभी भी जरूरत से अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता.. इसे भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि बच्चों को माता–पिता से दूर विदेश भेजने से उनके कल्याण से किसी भी तरह का समझौता नहीं होगा, खासकर जब बच्चों ने इतनी मेहनत की हो।" अदालत ने कहा कि मां की बिना किसी ठोस आधार वाली चिंताओं के कारण बच्चों की रुचि और कड़ी मेहनत को बर्बाद नहीं किया जा सकता। अदालत ने आदेश में यह भी कहा कि जब पति–पत्नी के बीच कड़वे झगड़ों के परिणामस्वरूप घर का माहौल तनाव से भर जाता है, तो बच्चे का स्वस्थ विकास गंभीर रूप से प्रभावित होता है।

फ्रिज में भी रखा रह जाता है आधा कटा नींबू? बर्बादी से बचाने के लिए ऐसे करें स्टोर

नींबू कई भारतीय डिशेज का टेस्ट बढ़ाने के काम आता है। यह विटामिन सी का भी बढ़िया सोर्स है। तो कोशिश करें कि किसी न किसी तरह से नींबू आहार में शामिल करें। यह आपकी इम्यूनिटी और स्किन के लिए भी अच्छा है। नींबू के स्टोरेज को लेकर अक्सर दिक्कतें आती हैं। कई बार नींबू की कुछ बूंदों की जरूरत होती है और आधा कटा नींबू रखा–रखा खराब हो जाता है। यहां कुछ किचन हैक्स हैं जो आपके काम आ सकते हैं।

3–4 दिन स्टोर करना हो तो...

नींबू विटामिन सी से भरपूर होता है। इसे कई डिशेज में खट्टापन लाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। नींबू का जूस भी नमकध्चीनी या दोनों के साथ पिया जाता है। ज्यादातर घरों में अगर आप फ्रिज चेक करें तो इसमें कहीं न कहीं आधा नींबू रखा दिख जाएगा। नींबू ऐसे रखने से इसकी फ्रेशनेस जाती है साथी ही कुछ वक्त बाद यह यूज का भी नहीं रहता। इसके लिए एक तरीका है कि एक कांच का ढक्कन वाला जार लें। इसमें कुछ नींबू निचोड़कर फ्रिज में स्टोर कर लें। इससे आप खाना बनाते वक्त नींबू का रस निकालने के झंझट से बचे रहेंगे और नींबू बर्बाद नहीं होगा। ये नींबू का रस 3 से 4 दिन के लिए सही रहता है बाद में इसका स्वाद बदल जाता है।

जिप–टॉप बैग

आपको लग रहा है कि 3 दिन हो गए और रस ज्यादा बचा है तो इसे पानी के जूस बनाकर पी लें और जार में नया रस स्टोर कर लें। अगर आप चाहते हैं कि बिना कटे नींबू लंबे वक्त तक फ्रेश रहें तो आप इन्हें जिप–टॉप बैग में स्टोर करें। इससे यह करीब एक महीने तक फ्रेश रह सकते हैं। कटा नींबू भी इसमें रख सते हैं।

आइसक्यूब जमाएं

नींबू के रस को लंबे समय तक स्टोर करने के लिए इसे आइसक्यूब्स में जमा लें। इनको शिकंजी वगैरह में जरूरत के हिसाब से यूज करें। ध्यान रखें विटामिन सी आपकी हेल्थ और ब्यूटी के लिए भी अच्छा होता है। इसलिए रोजाना नींबू का रस पीना भी जरूरी है। इसे महीने भर के अंदर यूज कर लें।

इन फलों से रखें दूर

नींबू को ऐसे फल–सब्जियों के पास न रखें जिनसे इथाइलिन निकलता है। जैसे सेब, केला, आम, पाइनऐप्पल, कीवी, खुबानी, ऐवोकाडो।

संक्षिप्त

श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज जीत पाएगी टीम इंडिया? कोच गंभीर ने खिलाड़ियों को क्या दी नसीहत?

पोर्ट ऑफ स्पेन,एजेंसी। भारत के हेड कोच गौतम गंभीर ने शुभमन गिल की अगुवाई वाली टीम इंडिया को श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में हर चुनौती का सामना करने के लिए मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार रहने की सलाह दी है। श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज का आगाज 15 अगस्त से होना है। इससे पहले, भारतीय टीम श्रीलंका इलेवन के खिलाफ तीन दिवसीय प्रैक्टिस मैच में हिस्सा लेगी, जिसकी शुरुआत सात अगस्त से होनी है। पहले टेस्ट की मेजबानी गॉल इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम करेगा, जबकि दूसरा टेस्ट मुकाबला 23 अगस्त से कोलंबो का सिंहलीज स्पोर्ट्स क्लब मैदान करेगा। गंभीर ने गुरुवार को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर किए गए वीडियो में कहा, श्दोस्तों, हम जानते हैं कि हमारे सामने क्या है। हम जानते हैं कि हम किसके लिए खेल रहे हैं। हम जोर लगा सकते हैं, हम अपनी सीमा को पार कर सकते हैं, हम सभी चीजों को पूरा कर सकते हैं। 15 तारीख की सुबह, चाहे हम पहले बैटिंग कर रहे हों, या पहले गेंदबाजी कर रहे हों, हमें हर सवाल और हर जवाब के लिए पूरी तरह तैयार रहना है। इसलिए पक्का करें कि हम अभी से सभी चीजों को पूरा करें। गंभीर ने नए खिलाड़ियों, ऑफ–स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर सारांश जैन और तेज गेंदबाज आकिब नबी का टेस्ट सेटअप में आधिकारिक तौर पर स्वागत किया। इसके साथ ही हेड कोच ने नए नियुक्त फील्डिंग कोच, सुभादीप घोष का भी स्वागत किया। गंभीर वीडियो में कहते हैं, दोस्तों, सभी का स्वागत है। हमारे साथ कुछ नए लोग आए हैं। सबसे पहले, सारांश, बधाई हो, आपने यहां तक पहुंचने के लिए बहुत मेहनत की है। जब भी आपको मौका मिले, अपने परिवार और देश को गर्व महसूस कराना सुनिश्चित करें। दूसरी बात, मैं आकिब को बधाई देना चाहता हूं, आपका पिछला सीजन शानदार रहा था, और आपने जम्मू–कश्मीर को रणजी ट्रॉफी जिताई, जो एक बड़ी उपलब्धि है। एक बार फिर बधाई। हेड कोच ने आगे कहा, आखिर में, मैं सुभादीप का भी स्वागत करना चाहता हूं। उन्होंने इतने वर्षों तक कई टीमों के साथ काम किया है। मुझे यकीन है कि उनका जुनून, उनकी प्रतिबद्धता इस टीम को आगे ले जाएगी और यह सुनिश्चित करेंगे कि उनका एनर्जी लेवल सभी को टारगेट हासिल करने में मदद करे।

कौन तोड़ेगा बटलर के टी20 में सर्वाधिक रन का रिकॉर्ड?

लंदन,एजेंसी। इंग्लैंड के विस्फोटक बल्लेबाज जोस बटलर ने टी20 क्रिकेट में नया इतिहास रच दिया है। द हंड्रेड टूर्नामेंट में मैनचेस्टर सुपर जाएंट्स की ओर से खेलते हुए उन्होंने वेस्टइंडीज के दिग्गज कीरोन पोलार्ड को पीछे छोड़कर टी20 क्रिकेट के इतिहास में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बनने की उपलब्धि हासिल की। इस उपलब्धि के बाद बटलर ने एक ऐसा बयान दिया, जिसने भारतीय क्रिकेट फैंस का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। वेल्श फायर के खिलाफ मुकाबले में बटलर ने महज 20 गेंदों में नाबाद 51 रन की तूफानी पारी खेली। इस दौरान उन्होंने दो चौके और छह छक्के लगाए। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 250 का रहा। इसी पारी के दौरान उन्होंने टी20 क्रिकेट में अपने कुल रन 14,833 तक पहुंचा दिए। बटलर ने इस मामले में किरोन पोलार्ड (14,803 रन) को पीछे छोड़ दिया। इससे पहले लंबे समय तक यह रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के महान बल्लेबाज क्रिस गेल (14,562 रन) के नाम था। बटलर ने 522 टी20 मैचों में नौ शतक और 105 अर्धशतकों की मदद से यह उपलब्धि हासिल की है। रिकॉर्ड अपने नाम करने के बाद बटलर ने कहा कि यह उपलब्धि उनके लिए बेहद खास है, लेकिन उन्हें भरोसा है कि भविष्य में कोई न कोई इस रिकॉर्ड को तोड़ेगा। उन्होंने भारतीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी का नाम लेते हुए बड़ा बयान दिया। बटलर ने कहा, यह सोचकर बहुत अच्छा लगता है कि टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन मेरे नाम हैं। एक दिन कोई न कोई इस रिकॉर्ड को तोड़ेगा और शायद उसका नाम वैभव सूर्यवंशी होगा। लेकिन फिलहाल यह मेरे लिए गर्व का पल है। बटलर ने माना कि कुछ महीने पहले उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और लगातार मेहनत करते रहे। उन्होंने कहा, श्क्रिकेट बहुत जल्दी बदल जाता है। कुछ महीने पहले मैं अपनी फॉर्म से जूझ रहा था, लेकिन पिछले कुछ हफ्तों में मुझे लग रहा है कि मैं अपने करियर की सबसे अच्छी बल्लेबाजी कर रहा हूं। आपके पास केवल दो विकल्प होते हैं– या तो हार मान लें या फिर ऊर्जा और दृढ़ संकल्प के साथ वापसी की कोशिश करें। मैंने दूसरा रास्ता चुना और उसी पर ध्यान केंद्रित किया। मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करते हुए वेल्श फायर ने मैट शॉर्ट के 71 और फिल सॉल्ट के 48 रन की बदौलत 100 गेंदों में चार विकेट पर 155 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करते हुए मैनचेस्टर सुपर जाएंट्स ने शुरुआत से ही आक्रामक बल्लेबाजी की। टिम साइफर्ट ने 36 गेंदों में नाबाद 62 रन बनाए, जबकि पॉल वाल्टर ने 18 गेंदों में 37 रन की तेज पारी खेली। बटलर की नाबाद 51 रन की विस्फोटक पारी की बदौलत टीम ने एक विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया और नौ विकेट से शानदार जीत दर्ज की।

श्रीलंका के खिलाफ उसके घर में 37 प्रतिशत टेस्ट जीता भारत, पिछले 10 मैच के आंकड़े क्या कहते हैं?

गॉल,एजेंसी। भारत और श्रीलंका के बीच 15 अगस्त से दो मैचों की टेस्ट सीरीज की शुरुआत होगी। भारतीय टीम बुधवार को श्रीलंका पहुंच चुकी है और टीम ने ट्रेनिंग भी शुरू कर दी है। साई सुदर्शन को छोड़कर कोई ऐसा खिलाड़ी नहीं है जो अनफिट है। जसप्रीत बुमराह के बाहर होने से जरूर टीम को थोड़ा नुकसान हुआ है, लेकिन श्रीलंका की टर्निंग पिच पर भारत को सबसे बड़ी उम्मीद बल्लेबाजों से है। भारत का रिकॉर्ड पिछले कुछ वर्षों में स्पिन के खिलाफ बेहद खराब रहा है। ऐसे में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2025–27 चक्र के फाइनल का लक्ष्य बनाकर उतरी टीम इंडिया के लिए यह सीरीज जीतनी जरूरी है। रिकॉर्ड भी भारत के पक्ष में है, लेकिन श्रीलंका अपने घर में ज्यादा खतरनाक होती है। भारत और श्रीलंका के बीच पहला टेस्ट सितंबर 1982 में खेला गया था। चेन्नई में खेला गया यह मैच ड्रॉ रहा था। तब से लेकर अब तक दोनों टीमों के बीच कुल 46 टेस्ट खेले गए हैं। इसमें से भारत ने 47.8 प्रतिशत टेस्ट जीते हैं। यानी भारत के खाते में 22 जीत हैं। वहीं, श्रीलंका ने सात टेस्ट जीते हैं। दोनों टीमों के बीच 17 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं। भारत ने श्रीलंका के खिलाफ पिछला टेस्ट चार साल पहले खेला था। मार्च 2022 में बंगलूरू में खेले गए उस मुकाबले में टीम इंडिया ने 238 रन से जीत हासिल की थी। दोनों टीमें इस प्रारूप में चार साल बाद आमने–सामने आएंगी। भारत ने श्रीलंका के खिलाफ उसके घर में 24 टेस्ट खेले हैं। इसमें से उसने नौ टेस्ट जीते हैं। वहीं, श्रीलंका ने सात टेस्ट में जीत हासिल की है। आठ मुकाबले ड्रॉ रहे हैं। भारत ने श्रीलंका के खिलाफ उसके घर में पिछला टेस्ट अगस्त 2017 में खेला था। तब पल्लेकेले में खेले गए उस मुकाबले को भारत ने पारी और 171 रन से अपने नाम किया था। वहीं, गॉल में दोनों टीमें टेस्ट में चार बार आमने–सामने आई हैं। इसमें से सभी पांच मैचों के जीत या हार में नतीजे निकले हैं, यानी कोई टेस्ट ड्रॉ नहीं हुआ। भारत और श्रीलंका के बीच यहां पांच टेस्ट खेले गए और भारत ने दो मैच जीते हैं और तीन गंवाए हैं। भारतीय टीम गॉल में श्रीलंका से पिछली बार जुलाई 2017 में भिड़ी थी। तब टीम इंडिया ने 304 रन से जीत हासिल की थी।

दोनों टीमों के हालिया फॉर्म पर नजर डालें तो भारत ने अपने पिछले छह टेस्ट में से दो गंवाए हैं। चार में टीम ने जीत हासिल की है। इसमें अफगानिस्तान के खिलाफ पिछला टेस्ट भी शामिल है, जो विश्व टेस्ट चौंपियनशिप का हिस्सा नहीं था। उससे पहले टीम इंडिया ने एक मैच इंग्लैंड से, दो टेस्ट वेस्टइंडीज से जीते थे। वहीं, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज 2–0 से गंवाई थी। वहीं, श्रीलंका ने अपने पिछले छह टेस्ट में से तीन गंवाए हैं। एक में उसने जीत हासिल की है, जबकि दो टेस्ट ड्रॉ रहे हैं। इस दौरान श्रीलंका को ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज के हाथों हार मिली। हालांकि, इन आंकड़ों के बावजूद भारत के लिए श्रीलंका को उसके घर में हराना आसाना नहीं होगा। भारत को श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट में आखिरी हार साल 2015 में मिली थी यानी पिछले 11 साल से भारतीय टीम श्रीलंका के खिलाफ अजेय रही है। भारतीय टीम को श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के आगाज से पहले ही बड़ा झटका लगा है। टीम के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अपनी इंजरी से न उबर पाने के कारण इस सीरीज से बाहर हो गए हैं। बुमराह के स्थान पर जम्मू–कश्मीर के युवा गेंदबाज आकिब नबी को टीम में शामिल किया गया है। आकिब ने घरेलू क्रिकेट में लगातार अपने प्रदर्शन से हर किसी का ध्यान खींचा है। वह जम्मू–कश्मीर की ओर से भारतीय टेस्ट टीम में चुने जाने वाले पहले खिलाड़ी भी हैं। वहीं, साई सुदर्शन की फिटनेस पर भी अभी सवाल है, हालांकि शक्रिकबजश की एक रिपोर्ट के मुताबिक, सुदर्शन पहले टेस्ट के लिए फिट हो जाएंगे और वह आठ अगस्त तक टीम से जुड़ सकते हैं। भारत और श्रीलंका के बीच सीरीज के दूसरे टेस्ट मैच की मेजबानी कोलंबो का सिंहली स्पोर्ट्स क्लब मैदान करेगा, जिसका आगाज 23 अगस्त से होना है। शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय टीम श्रीलंका के खिलाफ अपने दमदार रिकॉर्ड को बरकरार रखना चाहेगी। श्रीलंका टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का स्क्वॉड– शुभमन गिल (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), साई सुदर्शन, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, गुरनूर बरार, देवदत्त पडिक्कल, सारांश जैन और आकिब नबी।

संन्यास के बाद क्रिकेटरों की कमाई कैसे जारी रहती है? बीसीसीआई की पेंशन व्यवस्था को समझें

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। इसके साथ ही भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की पेंशन योजना एक बार फिर चर्चा में आ गई है। रहाणे ने भारत के लिए 85 टेस्ट मैच खेले हैं, इसलिए वह बीसीसीआई की सबसे ऊंची पेंशन श्रेणी में आते हैं। आइए जानते हैं कि यह योजना कैसे काम करती है और किसे कितनी राशि मिलती है। वैश्विक स्तर पर अनूठी पहल– बीसीसीआई दुनिया के उन चुनिंदा बड़े क्रिकेट बोर्डों में शामिल है, जो अपने पूर्व खिलाड़ियों के लिए स्वतंत्र रूप से मासिक पेंशन योजना संचालित करता है। इस मामले में यह क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड जैसे बोर्डों से अलग है। सक्रिय खिलाड़ी नियम– यह योजना केवल रिटायर्ड क्रिकेटरों के लिए है। यदि कोई खिलाड़ी संन्यास से वापसी कर दोबारा पेशेवर क्रिकेट खेलने लगता है, तो उसकी पेंशन अस्थायी रूप से रोक दी जाती है। पूरी तरह से दोबारा संन्यास लेने के बाद नियमों के अनुसार पेंशन फिर शुरू की जा सकती है। चिकित्सा सहायता: मासिक पेंशन के अलावा, कम से कम 10 प्रथम श्रेणी (फर्स्ट क्लास) मैच खेलने वाले रिटायर्स घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर 10 लाख रुपये तक के मेडिकल री–इम्बर्समेंट के पात्र होते हैं। बीसीसीआई की पेंशन योजना केवल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय घरेलू क्रिकेट में योगदान देने वाले पात्र प्रथम श्रेणी (फर्स्ट क्लास) खिलाड़ियों को भी इसका लाभ मिलता है। इस योजना के तहत 2003 से पहले संन्यास लेने वाले पात्र प्रथम श्रेणी क्रिकेटरों को 45,000 रुपये प्रति माह, जबकि अन्य पात्र पूर्व प्रथम श्रेणी खिलाड़ियों को 30,000 रुपये प्रति माह पेंशन दी जाती है। इसका उद्देश्य लंबे समय तक भारतीय घरेलू क्रिकेट की सेवा करने वाले खिलाड़ियों को रिटायरमेंट के बाद आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है। आमतौर पर पेंशन जारी रहती है। हालांकि, यदि कोई लाभार्थी बीसीसीआई या किसी राज्य क्रिकेट संघ में वेतनभोगी पद स्वीकार करता है, जैसे कोच, चयनकर्ता या प्रशासक, तो ऐसी स्थिति में पेंशन का भुगतान अस्थायी रूप से रोका जा सकता है।

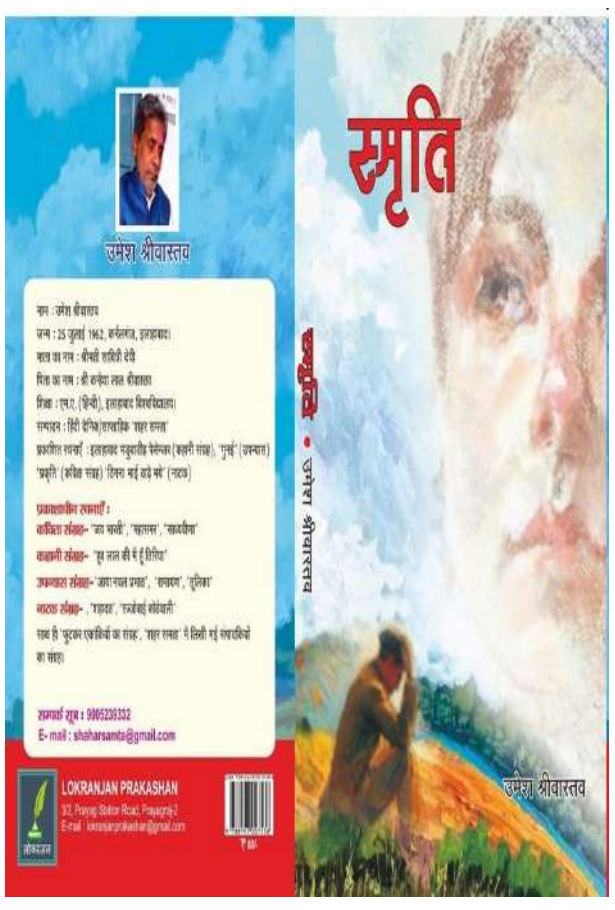

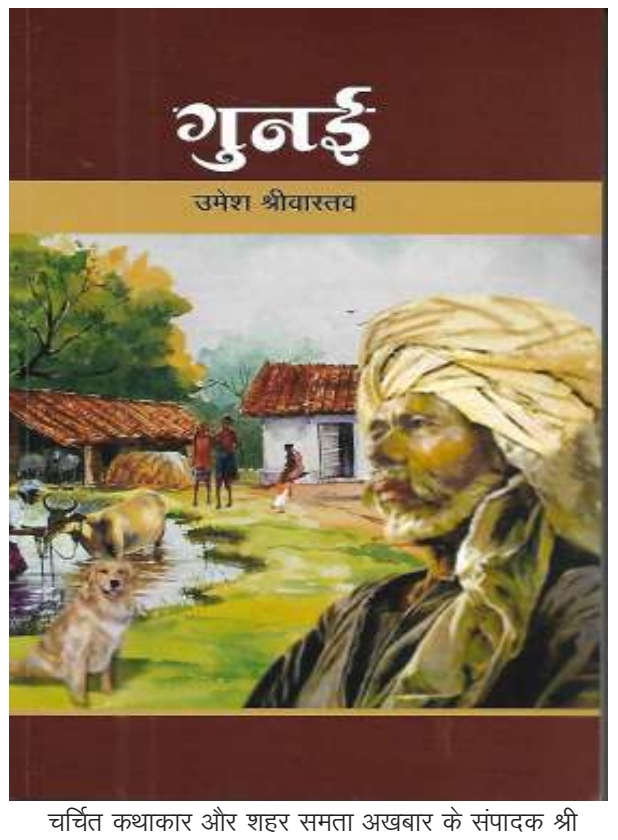

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

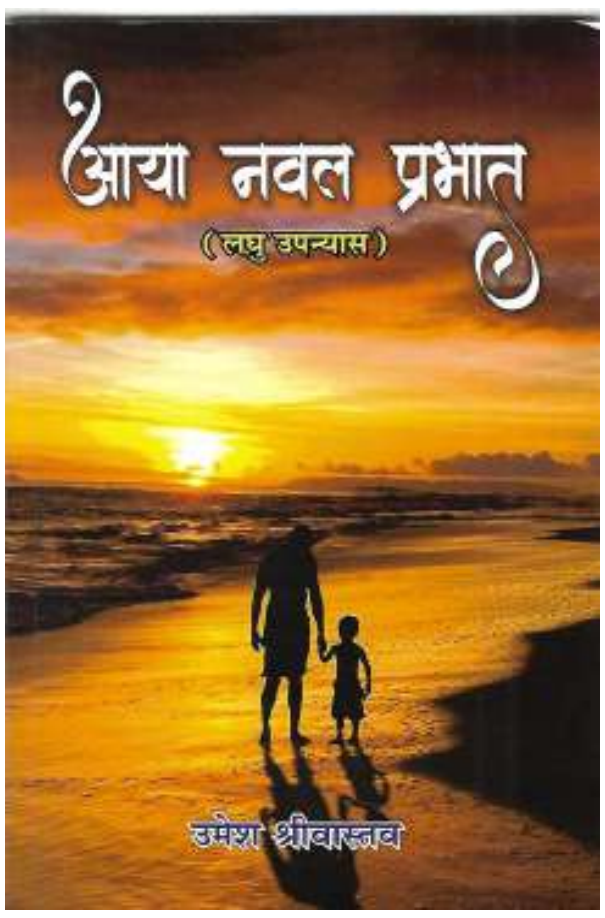

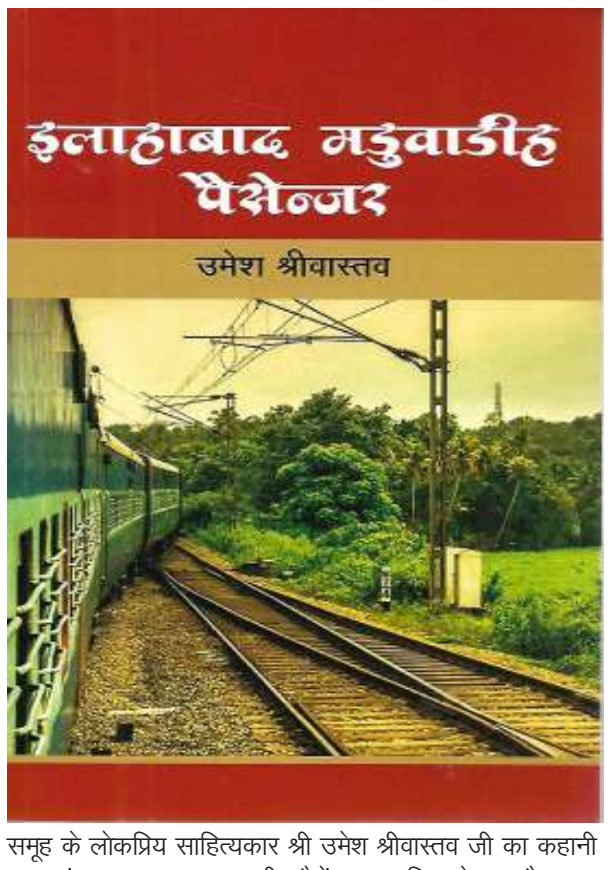

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

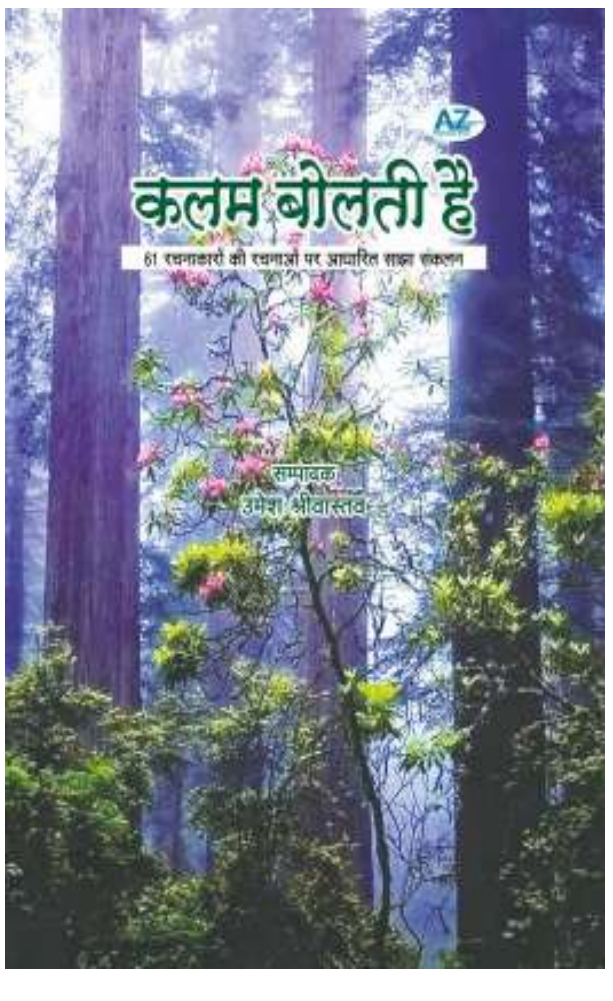

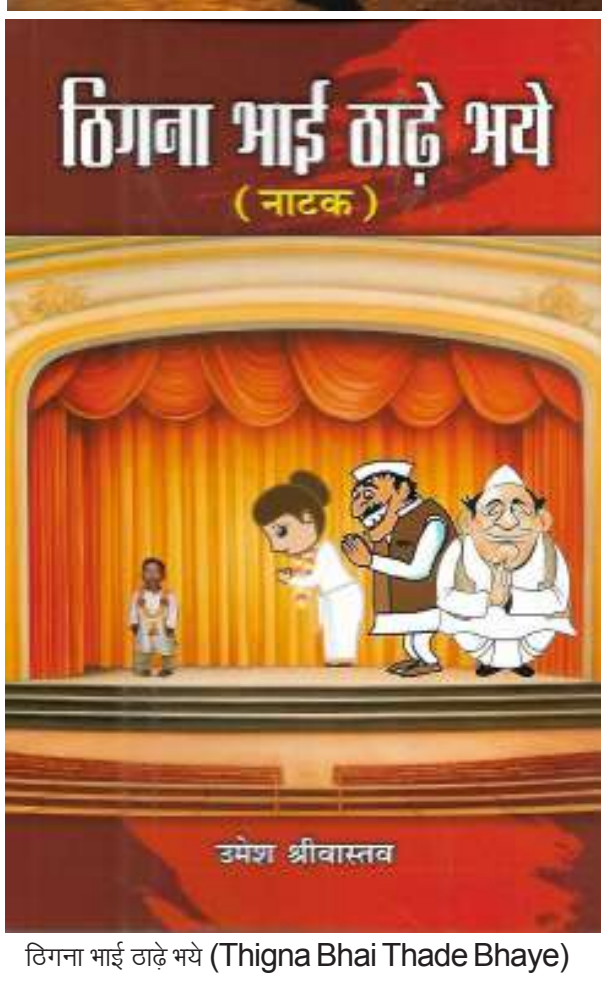

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

अमेरिका जाने की है तैयारी?: जान लें USCIS का नया नियम, वरना अधूरा आवेदन पड़ सकता है भारी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी नागरिकता एवं आव्रजन सेवा (USCIS) ने अपने अधिकारियों को फिर से यह विवेकाधिकार (Discretion) दे दिया है कि यदि कोई व्यक्ति इमिग्रेशन लाभ के लिए अधूरा आवेदन जमा करता है या पात्रता साबित करने

के लिए जरूरी दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराता, तो अधिकारी बिना अतिरिक्त अवसर दिए भी उसका आवेदन खारिज कर सकते हैं। पहले आवेदकों को कितना समय दिया जाता था?

इससे पहले लागू नीति के तहत, यदि किसी आवेदन में अतिरिक्त जानकारी या दस्तावेजों की जरूरत होती थी, तो आवेदकों को रिक्वेस्ट फॉर एविडेंस (त्थ्म्) या नोटिस ऑफ इंटेंट टू डिनाई (छव्प्क) मिलने के बाद जवाब देने के लिए 12 सप्ताह का समय दिया जाता था। वहीं, यदि यह नोटिस अमेरिका के बाहर भेजा जाता था, तो जवाब देने की समय–सीमा में अतिरिक्त 14 दिन भी जोड़े जाते थे। USCIS ने बुधवार को जारी अपने बयान में कहा, श्आवेदनकर्ता की जिम्मेदारी है कि वह आवेदन दाखिल करते समय यह साबित करे कि वह मांगे गए इमिग्रेशन लाभ के लिए पात्र है और निर्णय होने तक उसकी पात्रता बनी रहती है।श किस स्थिति में आवेदन सीधे खारिज किया जा सकता है? USCIS के अनुसार, यदि कोई आवेदक अपनी पात्रता साबित करने में विफल रहता है या आवेदन के साथ आवश्यक प्रारंभिक दस्तावेज जमा नहीं करता, तो एजेंसी बिना त्थ्म् या छव्प्क जारी किए भी आवेदन खारिज कर सकती है। नई नीति कब से लागू होगी और किन पर असर पड़ेगा? नई नीति तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गई है। इसका असर केवल नए आवेदनों पर ही नहीं, बल्कि उन सभी आवेदनों पर भी पड़ेगा जो फिलहाल USCIS के पास लंबित हैं। नई गाइडलाइन के तहत ैं अधिकारी आवश्यक प्रारंभिक दस्तावेजों के अभाव में आवेदन खारिज कर सकते हैं। यदि आवेदन दाखिल करते समय पात्रता स्थापित नहीं होती है, तब भी उसे अस्वीकार किया जा सकता है। हालांकि, यदि अधिकारी उचित समझें, तो वे अतिरिक्त दस्तावेज मांगने के लिए त्थ्म् जारी करने का विकल्प भी चुन सकते हैं। USCIS ने इस बदलाव की जरूरत क्यों बताई? USCIS ने कहा कि उसके संज्ञान में ऐसे मामले आए थे, जिनमें कुछ लोग जानबूझकर अधूरे आवेदन दाखिल कर देते थे ताकि मूल आवेदन पर फैसला आने तक वे रोजगार प्राधिकरण जैसे अन्य इमिग्रेशन लाभ हासिल कर सकें। एजेंसी का मानना है कि नई नीति ऐसे मामलों पर रोक लगाने में मदद करेगी।

गोल्फ क्लब में सेंध: ट्रंप के अफसर बनकर घुसे संदिग्ध पर क्या आरोप लगे? कार–घर से हथियार बरामद होने से हड़कंप

लॉस एंजिलिस, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कैलिफोर्निया स्थित गोल्फ क्लब में सुरक्षा अधिकारी होने का दावा करने वाले एक व्यक्ति को अवैध हथियारों के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों के अनुसार, आरोपी के वाहन और घर से कई हथियार, गोला–बारूद और अन्य सामान बरामद किया गया है। क्या आरोपी सुरक्षा अधिकारी बनकर गोल्फ क्लब पहुंचा था? अधिकारियों के मुताबिक 38 वर्षीय जीनीन जॉन टाएले को रविवार को रैंचो पालोस वर्डेस स्थित ट्रंप नेशनल गोल्फ क्लब से गिरफ्तार किया गया। ट्रंप के फंडरेजिंग डिनर के लिए वहां पहुंचने से दो दिन पहले यह कार्रवाई की गई। जांच में सामने आया कि आरोपी पहले शुक्रवार को भी गोल्फ क्लब परिसर में ईयरपीस पहनकर घूम रहा था और सुरक्षा एजेंसियों की गतिविधियों की फोटो व वीडियो बना रहा था। क्या उसने खुद को स्टेट डिपार्टमेंट का कर्मचारी बताया था? अधिकारियों के अनुसार रविवार को दोबारा गोल्फ क्लब पहुंचने पर टाएले ने संघीय एजेंटों से कहा कि वह स्टेट डिपार्टमेंट में कार्यरत है और सुरक्षा ड्यूटी के लिए आया है। उसने यह भी बताया कि उसकी गाड़ी में लोडेड हथियार मौजूद है। वाहन की तलाशी लेने पर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसके पास से 16 राउंड वाली मैगजीन और गोला–बारूद भी मिला। क्या आरोपी पर पहले से भी मामले दर्ज हैं? रिकॉर्ड के अनुसार टाएले पहले ही राज्य स्तर पर हथियार रखने के मामले और एक अलग घटना से जुड़े सेकेंड–डिग्री डकैती के आरोप में अदालत में पेश हो चुका है। फिलहाल वह राज्य के आरोपों में जेल में बंद है। क्या उसके घर से भी अवैध हथियार बरामद हुए? संघीय अधिकारियों के मुताबिक आरोपी के घर की तलाशी में एक बिना पंजीकृत शॉर्ट–बैरल राइफल, अन्य हथियार, मैगजीन, गोला–बारूद, बॉडी आर्मर और नोटबुक बरामद हुईं। शिकायत में कहा गया है कि बरामद एआर–स्टाइल राइफल को अवैध रूप से संशोधित कर उसकी बैरल 14 इंच से घटाकर 10 इंच कर दी गई थी। लॉस एंजिलिस काउंटी शेरिफ विभाग के अनुसार गोल्फ क्लब की पार्किंग में खड़े आरोपी के पिकअप ट्रक से लोडेड 9 एमएम पिस्टल, दूरबीन और षसिक्योरिटी प्रोटेक्शन एजेंटष लिखा बैज बरामद किया गया। क्या एफबीआई ने इसे गंभीर सुरक्षा मामला बताया? एफबीआई के लॉस एंजिलिस कार्यालय के सहायक निदेशक पैट्रिक ग्रैंडी ने कहा कि राष्ट्रपति के सार्वजनिक गोल्फ क्लब में उनके पहुंचने से कुछ दिन पहले आरोपी का व्यवहार कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए गंभीर चिंता का विषय था।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

पीओके में चुनाव: विरोध और बहिष्कार की अपील के बावजूद नवाज शरीफ की पार्टी PMLN को बढ़त, सरकार बनाना लगभग तय

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) की विधानसभा के चुनाव में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग–नवाज (पीएमएल–एन) ने बड़ी बढ़त हासिल कर ली है। चुनाव आयोग के मुताबिक, अब तक दो चरणों की मतगणना पूरी हो चुकी है, जिसमें पार्टी ने 34 में से 24 सीटों पर जीत दर्ज की है। इसके साथ ही पीएमएल–एन का अगली क्षेत्रीय सरकार बनाना लगभग तय माना जा रहा है। हालांकि चुनाव से पहले कई सप्ताह तक विरोध प्रदर्शन हुए और प्रतिबंधित संगठन ज्वाइंट अवामी एक्शन कमेटी (जेएएसी) ने लोगों से

मतदान का बहिष्कार करने की अपील की थी। इसके बावजूद बड़ी संख्या में लोगों ने वोट डाला। तीन चरणों में हो रहे हैं चुनाव क्षेत्रीय चुनाव आयोग के प्रवक्ता राजा शकील ने बताया कि सुरक्षा कारणों और भारी मानसूनी बारिश की वजह से चुनाव तीन चरणों में कराए जा रहे हैं। पहले दो चरणों में 34 सीटों पर मतदान और मतगणना पूरी हो चुकी है। बाकी 11 सीटों के लिए मतदान 10 अगस्त को होगा। राजा शकील के अनुसार, कई इलाकों में 50 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ, जबकि क्षेत्रीय राजधानी मुजफ्फराबाद में मतदान 56 प्रतिशत से ज्यादा रहा। 10 साल बाद सत्ता में वापसी अब तक के नतीजों से साफ है कि पीएमएल–एन पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में करीब 10 साल बाद सत्ता में वापसी करने जा रही है। जीत के बाद नवाज शरीफ ने विजयी उम्मीदवारों को बधाई दी और इसे लोकतंत्र की जीत बताया। विरोध और झड़पों के बीच हुआ मतदान चुनाव प्रचार के दौरान जेएएसी ने लगातार प्रदर्शन किए और लोगों से मतदान न करने की अपील की। हाल ही में क्षेत्रीय सरकार ने इस संगठन पर सुरक्षा और कानून–व्यवस्था का हवाला देते हुए प्रतिबंध लगा दिया था। मतदान से पहले संगठन के समर्थकों और पुलिस के बीच कई बार झड़पें भी हुईं। इसके बावजूद स्थानीय लोगों ने हिंसा की आशंका के बीच मतदान किया। विश्लेषकों का कहना है कि विरोध और हिंसा के बावजूद बड़ी संख्या में लोगों का मतदान करना लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर जनता के भरोसे को दर्शाता है। आरक्षित सीटों को लेकर विवाद चुनाव के दौरान सबसे बड़ा विवाद 12 आरक्षित सीटों को लेकर रहा। ये सीटें उन लोगों के लिए आरक्षित हैं, जो 1947 के बाद भारत प्रशासित कश्मीर से विस्थापित होकर पाकिस्तान में बस गए थे। जेएएसी का आरोप है कि इन सीटों की वजह से पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के बाहर रहने वाले लोगों को जरूरत से ज्यादा राजनीतिक प्रभाव मिलता है। संगठन इन सीटों को खत्म करने की मांग कर रहा है। हालांकि जून में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि ये सीटें संविधान से संरक्षित हैं और इन्हें खत्म करने के लिए संवैधानिक संशोधन जरूरी होगा। सरकार का क्या कहना है? पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर की सरकार का कहना है कि उसने जेएएसी की 38 में से 36 मांगें मान ली हैं। केवल आरक्षित सीटों का मुद्दा विधानसभा और संवैधानिक प्रक्रिया के जरिए ही हल किया जा सकता है। सरकार ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ प्रदर्शनकारियों ने चुनाव में बाधा डालने की कोशिश की और विरोध प्रदर्शनों में पाकिस्तान तालिबान के सदस्यों की घुसपैठ की आशंका भी जताई। हालांकि जेएएसी ने इन आरोपों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

'मोजतबा से संपर्क करना मुश्किल': सत्ता संघर्ष के बीच बोले ईरानी राष्ट्रपति, पेजेश्कियन के इस बयान मायने क्या?

तेहरान, एजेंसी। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन ने देश के सर्वोच्च नेता मोजतबा खामेनेई को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि मौजूदा हालात में मोजतबा खामेनेई से संपर्क करना बहुत मुश्किल हो गया है। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि खामेनेई अब भी देश के लिए ताकत का बड़ा स्रोत हैं और ईरान की रणनीति तथा जवाबी कार्रवाई में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका बनी हुई है। यह बयान ऐसे समय आया है जब ईरान की शीर्ष सत्ता में मतभेद और राष्ट्रपति तथा सुप्रीम लीडर के बीच तनाव की खबरें सामने आ रही हैं। उनकी मौजूदगी हमें आगे बढ़ने की ताकत देती है लेकिन उनकी मौजूदगी हमारे लिए बहुत बड़ी ताकत है, जिससे हम आगे बढ़ते रह सकते हैंश। मोजतबा खामेनेई सार्वजनिक रूप से काफी समय से नजर नहीं आए हैं। अमेरिकी–इस्राइली हमले के दौरान घायल होने के बाद उन्होंने किसी सार्वजनिक

कार्यक्रम में हिस्सा नहीं लिया है। वह अपने पिता और पूर्व सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत के बाद इस पद पर पहुंचे थे। सार्वजनिक रूप से नहीं दिख रहे, लेकिन फैसलों में सक्रिय

रिपोर्ट के मुताबिक, मोजतबा खामेनेई फिलहाल सार्वजनिक कार्यक्रमों से दूर हैं, लेकिन लिखित संदेशों के जरिए सरकार और अधिकारियों से संपर्क बनाए हुए हैं। उनकी गैरमौजूदगी को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। खास बात यह भी है कि वह पिछले महीने अपने पिता के अंतिम संस्कार में भी सार्वजनिक रूप से नजर नहीं आए थे। हालांकि राष्ट्रपति पेजेश्कियन ने इन अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि उनकी मोजतबा खामेनेई के साथ कई सकारात्मक बैठकें हुई हैं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम लीडर ने हमेशा उनके साथ श्सौहार्दपूर्ण व्यवहार और बेहद तार्किक सोचश का परिचय दिया है। राष्ट्रपति ने कहा कि कुछ लोग जानबूझकर उनकी अलग छवि पेश करने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि वास्तविकता इससे अलग है। मतभेद की खबरों ने बढ़ाई चर्चा राष्ट्रपति का यह बयान उन रिपोर्टों के बाद आया है जिनमें दावा किया गया कि मोजतबा खामेनेई ने राष्ट्रपति पेजेश्कियन को अंतिम चेतावनी दी है और अहम फैसलों में इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के कमांडर अहमद वाहिदी का समर्थन किया है। इस्राइली चौनल 14 ने सूत्रों के हवाले से दावा किया कि सुप्रीम लीडर ने राष्ट्रपति की राजनीतिक ताकत काफी हद तक सीमित कर दी है। इस्तीफे की धमकी दे चुके हैं रिपोर्ट में कहा गया कि राष्ट्रपति पेजेश्कियन पहले कई बार मतभेद होने पर इस्तीफे की धमकी दे चुके हैं और मई में उन्होंने औपचारिक रूप से इस्तीफा देने की भी कोशिश की थी। उनका आरोप था कि राष्ट्रीय सुरक्षा और विदेश नीति से जुड़े फैसलों में उनकी सरकार को पूरी तरह किनारे कर दिया गया है। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया कि अब सुप्रीम लीडर का झुकाव पूरी तरह ईरान की सैन्य नेतृत्व के साथ है, जिससे राष्ट्रपति की रणनीतिक फैसलों पर पकड़ कमजोर हो गई है। हालांकि, इन दावों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हुई है और ईरानी सरकार ने भी इन रिपोर्टों पर आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है।

अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना में अंधाधुंध गोलीबारी, कई लोगों की मौत, एक घायल का इलाज जारी

नॉर्थ केरोलिना, एजेंसी। अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना राज्य के कैसवेल काउंटी में बुधवार सुबह एक घर में हुई अंधाधुंध गोलीबारी में कई लोगों की मौत हो गई। घटना के बाद पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। पुलिस और जांच एजेंसियां मौके पर पहुंचकर मामले की जांच में जुटी हैं। घर के अंदर मिले कई लोग गोली से घायल नॉर्थ कैरोलिना स्टेट ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन के अनुसार, बुधवार सुबह करीब 8 बजे (स्थानीय समय) पुलिस को एक घर में गोलीबारी की सूचना मिली। सूचना मिलते ही पुलिस

और शेरिफ कार्यालय की टीम मौके पर पहुंची। वहां कई लोग गोली लगने से घायल मिले। घायलों में से एक व्यक्ति को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, जबकि कई अन्य लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। शुरुआती जांच में पारिवारिक विवाद की आशंका स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, कैसवेल काउंटी के शेरिफ टोनी डर्डन ने बताया कि मृतकों में एक संदिग्ध हमलावर भी शामिल है। कुल तीन परिवार के सदस्यों की मौत हुई है, जबकि एक अन्य रिश्तेदार घायल होकर अस्पताल में भर्ती है। हालांकि, गोलीबारी की वजह अभी साफ नहीं हो सकी है। अमेरिका में लगातार बढ़ रही गोलीबारी की घटनाएं अमेरिका में बंदूक हिंसा लंबे समय से गंभीर समस्या बनी हुई है। हर साल देश में सैकड़ों सामूहिक गोलीबारी की घटनाएं सामने आती हैं, जिनमें बड़ी संख्या में लोगों की जान जाती है।

2 अगस्तः ओरेगन के पोर्टलैंड में एक रिहायशी इलाके में हुई गोलीबारी में एक व्यक्ति की मौत हो गई और पांच अन्य घायल हो गए। घायलों में एक किशोर भी शामिल था।

1 अगस्तरू इडाहो के ट्विन फॉल्स शहर स्थित एक इन–एन–आउट बर्गर रेस्तरां में हुई गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि सात अन्य घायल हो गए। घटनास्थल से सबूत जुटा रही पुलिस इन लगातार हो रही घटनाओं ने अमेरिका में बंदूक नियंत्रण कानूनों और सार्वजनिक सुरक्षा को लेकर बहस को फिर तेज कर दिया है। फिलहाल, पुलिस घटनास्थल से सबूत जुटा रही है और आसपास के लोगों से पूछताछ कर रही है। अधिकारियों ने कहा कि जांच पूरी होने के बाद ही घटना के कारणों का खुलासा किया जाएगा।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

क्या बदलने वाला है होर्मुज का नक्शा?: ईरान ने नई समुद्री व्यवस्था का किया खुलासा, ओमान भी हुआ सहमत

एजेंसी/ईरान और ओमान होर्मुज जलडमरूमध्य से व्यावसायिक जहाजों की आवाजाही के लिए नई व्यवस्था को अंतिम रूप देने के बेहद करीब पहुंच गए हैं। ईरान के एक वरिष्ठ राजनयिक के अनुसार, प्रस्तावित व्यवस्था के तहत फिलहाल लागू अस्थायी उत्तरी और दक्षिणी मार्गों की जगह दो से चार महीने के लिए ईरान के क्षेत्रीय जल से होकर गुजरने वाला एक नया एकल समुद्री मार्ग लागू किया जाएगा। क्या नई शिपिंग व्यवस्था पर लगभग सहमति बन चुकी है? ईरान की सरकारी समाचार एजेंसी आईआरएनए (प्त्छ।) को दिए गए साक्षात्कार में उप विदेश मंत्री (कानूनी एवं अंतरराष्ट्रीय मामलों) काजेम गरीबाबादी ने कहा कि तीन सप्ताह से अधिक समय तक चली बातचीत के बाद दोनों देशों के बीच प्रवेश और निकास मार्ग के नक्शे सहित लगभग सभी अहम मुद्दों पर सिद्धांततः सहमति बन गई है। क्या इसका मतलब होर्मुज जलडमरूमध्य पूरी तरह खुल जाएगा?

गरीबाबादी ने स्पष्ट किया कि संभावित समझौते का यह अर्थ नहीं है कि होर्मुज जलडमरूमध्य को पूरी तरह खोल दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि नई व्यवस्था केवल व्यावसायिक जहाजों की आवाजाही के लिए निर्धारित मार्ग से संबंधित है और इसे पूर्ण रूप से सामान्य संचालन की बहाली नहीं माना जाना चाहिए। अमेरिका के साथ बातचीत के दावों पर ईरान ने क्या कहा?

ईरानी उप विदेश मंत्री ने अमेरिका के साथ किसी औपचारिक वार्ता के दावों को खारिज करते हुए कहा कि तेहरान को वॉशिंगटन की ओर से ऐसे संदेश मिले हैं, जिनमें जून में दोनों देशों के बीच हुए शांति समझौता ज्ञापन (MoU) के तहत अपनी प्रतिबद्धताओं पर लौटने की इच्छा जताई गई है। जलडमरूमध्य को पूरी तरह खोलने की शर्त क्या है? ईरानी वार्ता दल से जुड़े एक सूत्र ने अर्ध–सरकारी फार्स समाचार एजेंसी को बताया कि होर्मुज जलडमरूमध्य को पूरी तरह खोलने का फैसला इस बात पर निर्भर करेगा कि अमेरिका शांति समझौते के तहत किए गए अपने वादों को व्यवहारिक रूप से कितना लागू करता है। सूत्र ने यह भी कहा कि अमेरिकी वित्त विभाग द्वारा बुधवार को एक इराकी एयरलाइन पर लगे प्रतिबंध हटाने का इस समझौते से कोई संबंध नहीं है। ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण क्यों कड़ा किया था? ईरान ने 28 फरवरी को होर्मुज जलडमरूमध्य पर अपना नियंत्रण सख्त करते हुए इजराइल और अमेरिका से जुड़े या उनके सहयोगी जहाजों की सुरक्षित आवाजाही पर रोक लगा दी थी। तेहरान ने यह कदम अपने क्षेत्र पर अमेरिका और इजराइल के संयुक्त हमलों के बाद उठाया था। अमेरिका और ईरान के बीच सैन्य तनाव कैसे बढ़ा? पिछले महीने अमेरिकी सेना ने ईरान के कई ठिकानों पर हवाई हमले किए थे। अमेरिका का कहना था कि यह कार्रवाई जलडमरूमध्य में जहाजों पर ईरानी हमलों के जवाब में की गई और इसका उद्देश्य व्यावसायिक समुद्री यातायात को खतरा पहुंचाने की ईरान की क्षमता को कमजोर करना था। ईरान ने अमेरिकी कार्रवाई का क्या जवाब दिया? अमेरिकी हमलों के जवाब में ईरान ने मिसाइलों और ड्रोन के जरिए क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य अड्डों और अन्य सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया, जिससे दोनों देशों के बीच तनाव और अधिक बढ़ गया।

ड्रोन को लेकर चीन का बड़ा दांव, छह अमेरिकी कंपनियों पर प्रतिबंध

बैंकॉक, एजेंसी। अमेरिका की ओर से लगाए गए नए व्यापारिक प्रतिबंधों के जवाब में चीन ने कई कड़े आर्थिक कदम उठाए हैं। चीन ने छह अमेरिकी कंपनियों को ब्लैकलिस्ट में डाल दिया है और अमेरिका को ड्रोन, उनके प्रमुख पुर्जों तथा संबंधित तकनीक के निर्यात पर कड़े नियंत्रण लागू कर दिए हैं। साथ ही आयातित प्रिंटर सॉफ्टवेयर और कार्यालय उपकरणों की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से जांच शुरू कर दी है। चीनी वाणिज्य मंत्रालय ने कहा, कार्रवाई अमेरिका की ओर से चीनी ड्रोन के आयात पर रोक लगाने, 43 चीनी कंपनियों को उइगर जबरन श्रम रोकथाम कानून की सूची में शामिल करने और नए टैरिफ लगाने के जवाब में की गई है।

ईरान में तख्तापलट की तैयारी: ट्रंप ने वेनेजुएला की मिसाल क्यों दी? परमाणु का जिक्र कर तेहरान को समझौते की धमकी

लास वेगास/तेहरान, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अमेरिका ईरान में वही कर रहा है जो उसने वेनेजुएला में किया था। उन्होंने कहा कि अमेरिका तेहरान के साथ समझौता करना चाहता है, लेकिन किसी भी कीमत पर ईरान को परमाणु हथियार विकसित करने की अनुमति नहीं देगा। वहीं ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने दावा किया कि विरोधी ताकतों ने इस्लामिक गणराज्य को अस्थिर करने और तख्तापलट की कोशिश की, लेकिन देश का नेतृत्व और जनता एकजुट रही। क्या ट्रंप ने ईरान की तुलना वेनेजुएला से की? लास वेगास में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ट्रंप ने कहा कि अमेरिका ईरान में वही कर रहा है जो उसने वेनेजुएला में किया था। उन्होंने दावा किया कि हालिया सैन्य कार्रवाई के जरिए अमेरिका ने ईरान को कमजोर किया है, लेकिन वह अब भी बातचीत के लिए तैयार है। ट्रंप ने कहा कि वह समझौता करना पसंद करेंगे क्योंकि वह लोगों की जान नहीं लेना चाहते। क्या ट्रंप ने बड़े सैन्य हमले का भी दावा किया? ट्रंप ने कहा कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे बड़े सैन्य हमले की तैयारी की गई थी, लेकिन ईरान की ओर से बातचीत की इच्छा जताए जाने के बाद उसे रोक दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि बाद में ईरान ने इस दावे से इनकार किया, लेकिन दोनों पक्षों के बीच बातचीत जारी है और आगे क्या होगा, यह देखना होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि हालिया घटनाक्रम के बाद ईरान अब अमेरिका का सम्मान करता है। उन्होंने दोहराया कि ईरान को कभी भी परमाणु हथियार हासिल नहीं करने दिए जाएंगे और इसी उद्देश्य से अमेरिका अपनी नीति पर कायम है। क्या ट्रंप ने वेनेजुएला और प्ब्म् का भी जिक्र किया? ट्रंप ने वेनेजुएला के गैंग ट्रेन डे अरागुआ के खिलाफ कार्रवाई का उल्लेख करते हुए अमेरिकी आव्रजन एजेंसी प्ब्म् की सराहना की। उन्होंने कहा कि अमेरिका वेनेजुएला से बड़ी मात्रा में तेल प्राप्त कर रहा है और दोनों देशों के संबंध बेहतर हैं। ट्रंप ने वेनेजुएला को दुनिया के सबसे समृद्ध तेल उत्पादक देशों में से एक बताया और कहा कि अमेरिका को कराकास के साथ जुड़ाव का लाभ मिला है। क्या ट्रंप ने ईरान से बातचीत में प्रगति का भी दावा किया? ट्रंप ने कहा कि ईरान के साथ संपर्क में काफी प्रगति हुई है और ईरानी अधिकारियों ने बातचीत की पहल की है।

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।